ISSN 0976- 8300

विश्व आयुर्वेद परिषद पत्रिका

वर्ष-17 अंक-11-12, सम्वत् 2077 कार्तिक-मार्गशीर्ष नवम्बर-दिसम्बर 2020

स्रोतोमयं हि शरीरं

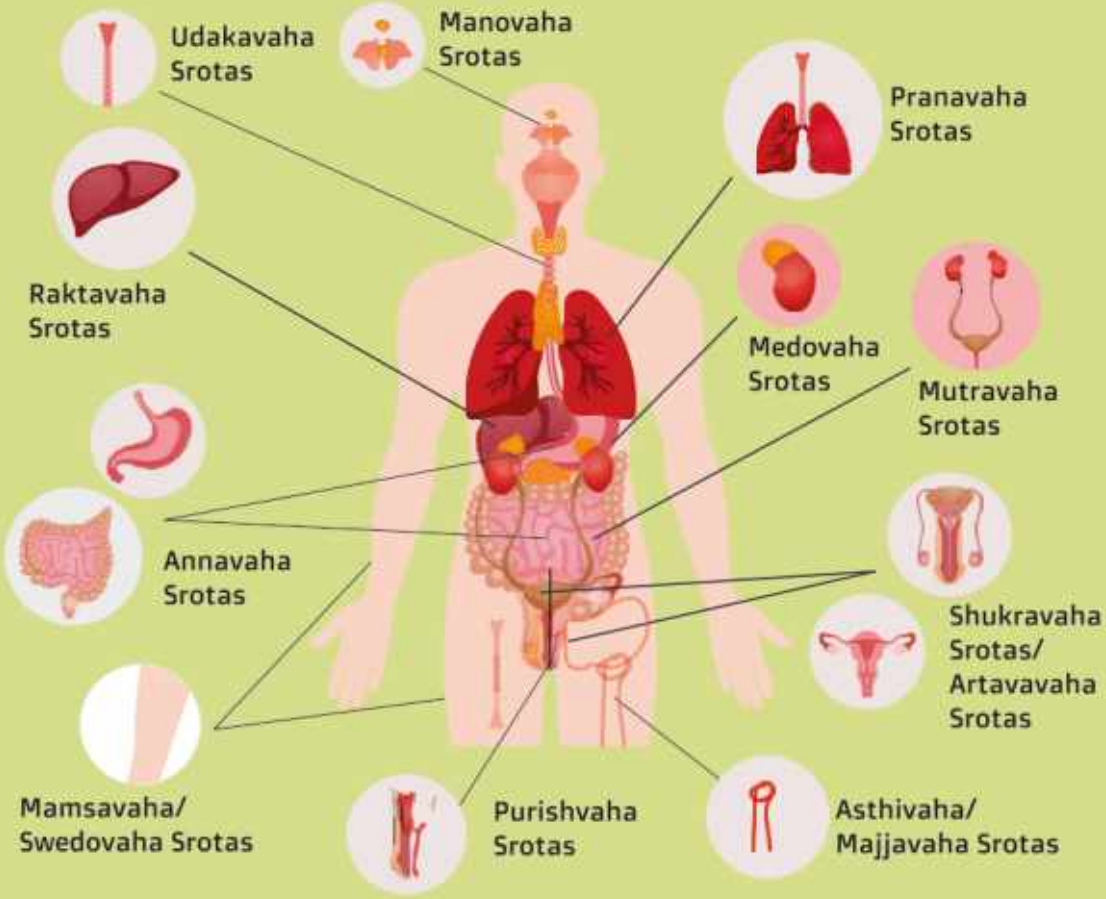

www.vishwaayuraveda.org

हेमन्त ऋतु

A Reviewed

Journal of Vishwa Ayurved Parishad

₹50/–

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा की सूची में 37 लाख नये हितग्राही जुड़े

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

जरूरतमंदों के साथ हर कदम पर है सरकार

- प्रदेश के 25 श्रेणियों के पात्र लगभग 37 लाख हितग्राही जिनके पास राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम की पात्रता पर्ची नहीं है, उन्हें पात्रता पर्ची जारी कर निःशुल्क खाद्यान्न प्रदाय किये जाने का अभियान प्रारंभ किया गया है।
- एक सितम्बर से प्रदेश के ऐसे सभी गरीबों को जिन्हें अभी तक उचित मूल्य राशन नहीं मिल रहा था, अब उन्हें 1 रुपये प्रति किलो में 5 किलो गेहूं, चावल एवं एक किलो नमक का पैकेट प्रतिमाह प्रदान किया जा रहा है।

- कोरोना संक्रमण के दौरान गरीब परिवारों को अतिरिक्त खाद्यान्न उपलब्ध कराने के उद्देश्य से अप्रैल माह से दिया जाने वाला निःशुल्क राशन अब नवंबर माह तक प्रदाय किया जाएगा।
- प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के अंतर्गत सम्मिलित पात्र हितग्राहियों को अतिरिक्त रूप से अप्रैल 2020 से 5 किलो प्रति हितग्राही निःशुल्क खाद्यान्न और प्रति परिवार 01 किलो दाल दी जा रही है।

हर हितग्राही को खाद्यान्न देने के लिए प्रतिबद्ध

मध्यप्रदेश सरकार

प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेंडर आत्मनिर्भर निधि योजना

शहरी पथ विक्रेता ऋण

योजना के अंतर्गत नाई, बांस की डलिया, कबाड़ी वाला, लोहार, पनवाड़ी, मोची, चाय की दुकान, सब्जी भाजी, फूल विक्रेता, वस्त्र विक्रेता, हथकरघा और आईसक्रीम पार्लर सहित 35 व्यवसायों को सम्मिलित किया गया है।

मुख्यमंत्री ग्रामीण पथ विक्रेता ऋण योजना

- ग्रामीण क्षेत्र के लिये योजना प्रारंभ करने वाला पहला राज्य बना मध्यप्रदेश।
- 6 लाख 58 हजार ग्रामीण पथ विक्रेताओं ने कराया इस योजना में पंजीयन।
- 4 लाख 7 हजार 707 प्रकरण सत्यापित।
- 3 लाख 52 हजार 656 प्रकरण स्वीकृत।
- 1 लाख 84 हजार 384 प्रकरण बैंक को अग्रेषित।
- 22 हजार 287 हितग्राहियों को ऋण वितरित

ग्रामीण पथ विक्रेता ऋण

योजना के अंतर्गत केश शिल्पी, हाथठेला चालक, साइकिल रिक्शा चालक, कुम्हार, साइकिल एवं मोटर साइकिल मैकेनिक, बढ़ई, ग्रामीण शिल्पी, बुनकर, धोबी, टेलर और कर्मकार मंडल से संबंधित कामगार लाभ ले सकेंगे।

देश में मध्यप्रदेश नंबर 1

- 378 नगरीय निकायों में 8 लाख 78 हजार 488 स्ट्रीट वेंडर्स का पंजीयन
- अभी तक 4 लाख 53 हजार 885 आवेदन सत्यापित
- 4 लाख 13 हजार 991 स्ट्रीट वेंडर्स को परिचय-पत्र वितरित
- लोन स्वीकृति हेतु बैंकों को 2 लाख 93 हजार 219 प्रकरण प्रेषित
- 1 लाख 67 हजार 315 से अधिक स्ट्रीट वेंडर्स को लोन स्वीकृत
- देश में कुल स्वीकृत प्रकरणों में 47 प्रतिशत से अधिक म.प्र. के
- अब तक 1 लाख 1 हजार 585 स्ट्रीट वेंडर्स को ऋण वितरित

आइये हम सब मिलकर आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश बनायें

A298

D16085

भगवान धन्वन्तरि प्रकाशोत्सव का आयोजन

प्रकाशन तिथि - 15-12-2020
पंजीकरण संख्या - LW/NP507/2009/11
ISSN 0976- 8300
आर. एन.आई. नं. : यू.पी.बिल./2002-9388

ayush Sanjivini

Aarogya Setu

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

मध्यप्रदेश शासन

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

विकास के प्रतिबद्ध प्रयास

- मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना में प्रधानमंत्री सम्मान निधि के हितग्राहियों को 4000 रुपये की अतिरिक्त राशि राज्य सरकार की ओर से।
- किसानों को ब्याजमुक्त ऋण के लिए बैंकों और समितियों को 800 करोड़ रुपये जारी।
- आदिवासी वनाधिकार पत्रों का वितरण- 2 लाख 70 हज़ार से अधिक व्यक्तिगत और 39 हज़ार 996 से अधिक सामुदायिक वनाधिकार पत्रों का वितरण।
- चम्बल प्रोब्रोस वे- भिण्ड, मुरैना और श्योपुर होते हुए राजस्थान सीमा तक कुल 316 कि.मी. लम्बा।
- रीवा सौर परियोजना- विश्व की सबसे बड़ी परियोजनाओं में से एक। 4000 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित परियोजना में 750 मेगावॉट बिजली का उत्पादन।
- वर्ष 2018-19 के खरीफ एवं रबी फसलों के लिए 16 लाख किसानों को 3100 करोड़ रुपये की फसल बीमा राशि का भुगतान।
- विभिन्न योजनाओं में आर्थिक सहायता- जरूरतमंदों के खातों में 24 विभागों की विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत 40 हजार 500 करोड़ रुपये से अधिक की राशि अंतरित।
- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना - उद्यानिकी फसलों को भी रबी 2020-21 से रबी 2022-23 के लिए सम्मिलित करते हुए क्रियान्वयन।
- प्रदेश के इतिहास में पहली बार महिला स्व-सहायता समूहों को 479.44 करोड़ रुपये के ऋण स्वीकृत और 343 करोड़ रुपये के ऋण वितरित।
- संबल योजना- 6 माह में 25 हजार से अधिक हितग्राहियों को 268 करोड़ रुपये की सहायता।
- राष्ट्रीय जल जीवन मिशन- 3 हजार करोड़ रुपये से अधिक की योजनाएं स्वीकृत। ग्रामीण क्षेत्र के 26 लाख से अधिक घरों में नल कनेक्शन का लक्ष्य।
- प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के 8 हजार 241 हितग्राहियों को 82 करोड़ 41 लाख रुपये की राशि सिंगल क्लिक के माध्यम से उनके खातों में अंतरित।
- प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के एक लाख 78 हजार 417 हितग्राहियों को कुल 451 करोड़ रुपये की राशि सिंगल क्लिक के माध्यम से अंतरित।
- बिजली बिलों में राहत- 97 लाख से अधिक बिजली उपभोक्ताओं को बिजली बिलों में 623 करोड़ रुपये से अधिक की राहत।

A298

D16085

सरकार के फैसले हैं मददगार
आत्मनिर्भरता का सपना होगा साकार

विश्व आयुर्वेद परिषद् के लिए प्रोफेसर सत्येन्द्र प्रसाद मिश्र, संरक्षक, विश्व आयुर्वेद परिषद् द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित कराकर, 1/231 विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 से प्रकाशित।

प्रधान सम्पादक - **प्रोफेसर सत्येन्द्र प्रसाद मिश्र**

विश्व आयुर्वेद परिषद पत्रिका
Journal of Vishwa Ayurved Parishad

वर्ष - 17, अंक - 11-12 कार्तिक-मार्गशीर्ष नवम्बर-दिसम्बर 2020

संरक्षक :
- डॉ० रमन सिंह (पूर्व मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़)
- प्रो० योगेश चन्द्र मिश्र (राष्ट्रीय संगठन सचिव)

प्रधान सम्पादक :
- प्रो० सत्येन्द्र प्रसाद मिश्र

सम्पादक :
- डॉ० अजय कुमार पाण्डेय

सम्पादक मण्डल :
- डॉ० ब्रजेश गुप्ता
- डॉ० मनीष मिश्र
- डॉ० आशुतोष कुमार पाठक

अक्षर संयोजन :
- बृजेश पटेल

प्रबन्ध सम्पादक :
- डॉ० कमलेश कुमार द्विवेदी

सम्पादकीय कार्यालय :
विश्व आयुर्वेद परिषद् पत्रिका
1/231, विरामखण्ड, गोमतीनगर
लखनऊ - 226010 (उत्तर प्रदेश)
लेख सम्पर्क- 09452827885, 09336913142
E-mail - drajaipandey@gmail.com
dwivedikk@rediffmail.com
vapjournal@rediffmail.com
manish.arnav@gmail.com
rebellionashu@gmail.com

सम्पादक मण्डल के सभी सदस्य मानद एवं अवैतनिक है। पत्रिका के लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है। आपके सुझावों का सदैव स्वागत है।

Contents

1- EDITORIAL **2**

2- पाथेय – माननीय भैया जी जोशी **3**

3- सन्देश–माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी **4**

4- SURGICAL PROCEDURES IN SUSHRUTA SAMHITA
- R. K. Singh **8**

5- PATHYA-APATHYA- IMPORTANCE IN AYURVEDA
- Monisha Raghuwanshi, Praveen Kumar Mishra **27**

6- प्राचीन वाङ्मय में स्रोतस की अवधारणा
- टीना सिंघल
आशुतोष कुमार यादव **36**

7- आयुर्वेद की संहिताओं में वर्णित गर्भजन्यविकृतियाँ
- अनुभा श्रीवास्तव
अन्जना सक्सेना, आशुतोष यादव **41**

8- ***Dr. Ganga Sahay Pandey Memorial All India U.G. Essay Competition- 2020 (Gold Medal First Prize Winner)***
AYURVEDA: OPENING NEW DIMENSIONS IN COVID ERA
- Diwas Kumar Sethi **46**

9- समाचार **54**

Editorial

The early months of 2020 witnessed a state of complete lockdown in different parts of the world including developed countries. The entire world had come to a standstill at multiple domains like health, economy, education, industry and so on. It is the dire need of the hour to focus on the positive impacts of the situation, as well as document the strategies we adopted to cope well with the crisis. This could be of reference and great assistance lest. With the advent of industrialization, the long working hours, irregular sleep-wake patterns, unhealthy diet habits, physical inactivity and continuous psychological stress had resulted in a sudden hike in the number of non-communicable diseases. The majority of deaths in the high income countries are due to non- communicable diseases, whereas in the lower income countries, infectious diseases cause mortality. The pandemic showing poor outcomes with existing co-morbidities awakened a sense of responsibility among the population in general regarding their health and hygiene. Various national and international organizations launched campaigns probing people to prioritize health and physical fitness. Yoga, zumba and aerobics started getting popularized as fitness tools for the entire family. As far as diet is concerned, there has been a remarkable improvement in the quality as well the timing of food intake. Timely intake of home-made wholesome meals has positively affected the health of the people. The complete lockdown restrictions have also reduced the number of road traffic accidents and the resultant decrease in the vehicular emission have improved the air quality and are likely to favor the patients of respiratory diseases.

Every individual play multiple roles in his/her life-in personal, professional, social domains. For emotional well-being, one must maintain a subtle balance between all these realms. The lockdown during COVID-19 has given an opportunity to stay together as a family. In spite of the job layoffs and educational setbacks, the institution of family has helped to cope up better. In the education sector, the virtual classrooms and the smart leaning applications have improved the accessibility of education to a large number of students at the same time, anywhere across the globe. The technological advancements have opened an unlimited global access to contents for personal development both in terms of formal education as well as skill- training. Lost years in education could be regained, passions revisited, relationships rekindled and humanitarian principles revived through the combined efforts of technology and social media. The pandemic helped to marginalize the socio- economic, gender and cultural disparities that otherwise divided the human race. The unnecessary luxuries during celebrations (like marriage) were replaced by essential bare- minimum, both due to lockdown impositions and impending financial crisis. Ayurveda, with its strong fundamental principles and inexpensive remedies, have gained popularity not just in its birthplace, but also throughout the globe. The prophylactic use of rasayana drugs like Aswagandha, Guduchi and Yashtimadhu not only acts as immunomodulators, but have profound benefits on the psyche as well owing to their medhya rasayana properties. The practice of Yoga for physical and mental well- being has been widely popularized during the lock- down period. Yogic poses like Bhujangasana, Ushtrasana, Matsyasana, Mandookasana, Trikonasana improves the cardio- pulmonary functions by facilitating proper chest expansion. Meditative practices reduces anxiety and stress by reducing the cortisol levels. It also improves the functioning of the neuroendocrine system and enhances immunity. Pranayama or breathing exercises like Nadeeshodhana, Ujjayi and Kapalbhati are beneficial to improve the lung functions. The practice of ujjayi improves oxygen saturation in the blood whereas Kapalbhati reduces the secretions in the respiratory tracts. Nadishodhan pranayama reduces the sympathetic activity and stimulate vagal (parasympathetic) activity and decreases stress and anxiety.

Practices of Sadvrtta like personal and community hygiene, compassion, minimalism, mutual respect, charity etc could be seen more at the face of crisis like the current one. With large number of the population being benefitted from the traditional healthcare systems, there has been a drastic increase in the number of researches going on in the field. As of July, 2020 out of the total of 203 clinical trials registered under CTRI, 105 were of AYUSH interventions. The complexities of the virus and the failure to develop targeted therapies have increased the acceptance of the traditional concepts of disease prevention and health promotion. This opportunity should be utilized for developing an integrated healthcare practice in India to deliver better clinical outcomes.

- Prof. Rajendra Prasad,

Dept. of Kayachikitsa, IMS, BHU, VARANASI

धन्वंतरि जयंती के अवसर पर पाथेय–माननीय भैया जी जोशी

धन्वंतरि जयंती के अवसर पर विश्व आयुर्वेद परिषद की ओर से आयोजित अखिल भारतीय समारोह में परिषद के कार्यकर्ताओं तथा देश को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह माननीय भैया जी जोशी ने कहा की आयुर्वेद इस देश की संस्कृति का प्रतीक है और आयुर्वेद के प्रचार प्रसार से भारतीय संस्कृति निश्चित रूप से और सुदृढ होगी। माननीय भैया जी ने कहा पिछले कुछ वर्षों में विश्व में योग तथा संस्कृत भाषा के प्रति आकर्षण बढ़ा है। अब आयुर्वेद के प्रति भी आकर्षण बढ़ रहा है। देश के मा. प्रधानमंत्री और विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्रमुख दोनों ने ही सभी से आग्रह किया है कि आयुर्वेद के विभिन्न प्रयोगों से लोगों का कोरोना का बचाव संभव है तथा आयुर्वेद के उपायों का प्रयोग सभी लोगों को निश्चित रूप से करना चाहिए। आयुर्वेद के प्रति समाज में श्रद्धा बढ़ रही है, आकर्षण बढ़ा है, इस आकर्षण को विश्वास में परिवर्तन की जिम्मेदारी इन विधाओं के प्रमुख लोगों की ही है और इस दृष्टि से परिषद के कार्यकर्ता इस तथ्य को समझकर इसी भाव से कार्य में संलग्न हों। परिषद का संकल्प है कि आयुर्वेद के प्रति प्रामाणिकता से, प्रखरता से और किसी प्रकार का भी समझौता न करते हुए हम आयुर्वेद की समृद्धि के लिए पूरी तत्परता से एवं निस्वार्थ भाव से काम करते रहेंगे। जब हम आयुर्वेद की शिक्षा व्यवस्था के अच्छी होने की चर्चा करते हैं तो हमको आयुर्वेद के अध्यापकों शोधकर्ताओं तथा आयुर्वेद के क्षेत्र में लगे हुए सभी सरकारी और गैर सरकारी संगठनों के मन में इसी प्रतिबद्धता के भाग का जागरण करना पड़ेगा और यह आत्मविश्वास ही हमें सफलता देगा। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में विश्व में विकल्प स्थापित करना निश्चित रूप से एक कठिन कार्य है। किंतु वर्तमान में प्रचलित जीवन शैली और उससे उत्पन्न विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के विषय में संपूर्ण विश्व में मंथन हो रहा है और सभी लोग एक नए विकल्प की तलाश में विचार कर रहे हैं। परिषद का विचार है कि आयुर्वेद में वर्णित जीवन शैली आहार–विहार तथा चिंतन इस विषय में विश्व का मार्गदर्शन करने में पूर्ण सक्षम एवं समर्थ है। हमें पूरा विश्वास है कि हम विश्व के सामने आयुर्वेद का एक ऐसा स्वरूप प्रकट कर सकते है, जिससे चिकित्सा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में अंतिम विकल्प के रूप में केवल आयुर्वेद ही विश्व की आवश्यकता बन जाए। इसी प्रकार के संकल्प के साथ परिषद के कार्यकर्ता आयुर्वेद को अपने प्राचीन गौरव पर स्थापित करने के लिए लगातार कार्यरत हैं। जब हम आयुर्वेद के छात्रों और विद्यार्थियों का का विचार करते हैं, तब निश्चित रूप से हमें बहुत ही श्रेष्ठ अध्यापक तथा शोधकर्ताओं की आवश्यकता होगी, जो विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ ही आत्मविश्वास और प्रतिबद्धता का भाग भी जागृत कर सके। जब हम आयुर्वेद की उन्नति की विचार करते हैं तो हमें अपनी कमियों का भी विचार करना भी आवश्यक है। यह कमी वास्तव में शास्त्र में नहीं है, किंतु इसके संचालन में जो व्यवस्थाएं होती हैं वह सब निर्दोष हो, इस हेतु नीति निर्देशकों पर आवश्यक दबाव बनाना भी आवश्यक है। यह संगठन आज विभिन्न आयामों पर काम कर रहा है, किंतु इन सभी आयामों पर और योजना पूर्वक काम करना होगा, जिससे कि भविष्य के लिए अच्छे अध्यापक और शोधकर्ता संस्थाओं से प्राप्त हो सके। हमें ऐसा वातावरण बनाना होगा जिससे चिकित्सा क्षेत्र में अध्ययन करने वाले सभी विद्यार्थियों की प्राथमिकता आयुर्वेद हो सके। शिक्षण संस्थाओं में कमियों की ओर इंगित करते हुए विद्वान वक्ता ने कहा की दो प्रकार की कमियां हो सकती हैं शिक्षण संस्थाओं में साधनों का अभाव और शिक्षकों की कमी। इन दोनों को दूर करने की योजना भी परिषद के कार्यकर्ताओं को सरकार के लिए के सम्मुख प्रस्तुत करनी चाहिए। एक बात और ध्यान रखनी चाहिए कि आयुर्वेद के सभी स्नातक केवल व्यवसाय में लगकर धन उपार्जन को अपना लक्ष्य न बनाएं, अन्यथा शिक्षा का क्षेत्र और शोध का क्षेत्र वंचित रह जाएंगे। परिषद एक उत्तरदायी संगठन है, अतः सभी बिंदुओं पर गहराई से विचार करते हुए हमें कार्य में लगना चाहिए। परिषद के कार्यकर्ताओं को सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त हो ऐसी मेरी शुभकामनाएँ हैं।

माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी जी का राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस पर सन्देश

आप सभी को धनतेरस, भगवान धनवंतरि की जयंती की बहुत–बहुत शुभकामनाएं। धनवंतरि जी आरोग्य के देवता माने जाते हैं और आयुर्वेद की रचना भी उनके आशीर्वाद से हुई है। आज के इस पावन दिन, आयुर्वेद दिवस पर, भगवान धनवंतरि से पूरी मानव जाति की प्रार्थना है कि वो भारत समेत पूरी दुनिया को आरोग्य का आशीष दें।

इस बार का आयुर्वेद दिवस हमारे युवा साथियों के लिए विशेष है। आज गुजरात के जामनगर में Institute of Teaching and Research in Ayurveda को Institute of National Importance के रूप में मान्यता मिली है। इसी तरह जयपुर के राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान को भी डीम्ड यूनिवर्सिटी के रूप में आज लोकार्पित किया गया है। आयुर्वेद में उच्च शिक्षा, रिसर्च और स्किल डेवलपमेंट से जुड़े इन बेहतरीन संस्थानों के लिए राजस्थान–गुजरात के साथ ही पूरे देश को बहुत–बहुत बधाई।

आयुर्वेद, भारत की एक विरासत है जिसके विस्तार में पूरी मानवता की भलाई है। ये देखकर किस भारतीय को खुशी नहीं होगी कि हमारा पारंपरिक ज्ञान, अब अन्य देशों को भी समृद्ध कर रहा है। आज ब्राजील की राष्ट्रीय नीति में आयुर्वेद शामिल है। भारत–अमेरिका संबंध हों, भारत–जर्मनी रिश्ते हों, आयुष और भारतीय पारंपरिक चिकित्सा पद्धति से जुड़ा सहयोग निरंतर बढ़ रहा है। ये भी प्रत्येक भारतीय के लिए बहुत गर्व की बात है कि WHO ने एक बहुत महत्वपूर्ण घोषणा की है। WHO ने Global Centre for Traditional Medicine इसकी स्थापना के लिए दुनिया में से भारत को चुना है और अब भारत में से दुनिया के लिए इस दिशा में काम होगा। भारत को ये बड़ी जिम्मेदारी सौंपने के लिए मैं World Health Organization का, विशेष रूप से WHO के महानिदेशक डॉक्टर टैड्रोस का भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। मुझे विश्वास है कि जिस प्रकार भारत Pharmacy of the world इस रूप में उभरा है, उसी प्रकार पारंपरिक चिकित्सा का ये Center भी Global Wellness का सेंटर बनेगा। ये सेंटर दुनिया भर की Traditional medicines के विकास और उनसे जुड़ी रिसर्च को नई बुलंदियां देने वाला साबित होगा।

बदलते हुए समय के साथ आज हर चीज Integrate हो रही है। स्वास्थ्य भी इससे अलग नहीं है। इसी सोच के साथ देश आज इलाज की अलग–अलग पद्धतियों के Integrations सभी को महत्व देने की तरफ एक के बाद एक कदम उठा रहा है। इसी सोच ने आयुष को, आयुर्वेद को देश की आरोग्य नीति– Health Policy का प्रमुख हिस्सा बनाया है। आज हम स्वास्थ्य के अपने पारपंरिक खजाने को सिर्फ एक विकल्प नहीं, बल्कि देश के आरोग्य का बड़ा आधार बना रहे हैं।

ये हमेशा से एक स्थापित सत्य रहा है कि भारत के पास आरोग्य से जुड़ी कितनी बड़ी विरासत है। लेकिन ये भी उतना ही सही है कि ये ज्ञान ज्यादातर किताबों में, शास्त्रों में रहा है और थोड़ा–बहुत दादी–नानी के नुस्खों में रहा है। इस ज्ञान को आधुनिक आवश्यकताओं के अनुसार विकसित किया जाना बहुत आवश्यक है। इसलिए, देश में अब पहली बार हमारे पुरातन चिकित्सा वाला ज्ञान जो है उस ज्ञान–विज्ञान को 21वीं सदी के आधुनिक विज्ञान से मिली जानकारी के साथ भी उसको जोड़ा जा रहा है, integrate किया जा रहा है, नई रिसर्च की जा रही है। तीन साल पहले ही हमारे यहां अखिल भारतीय आयुर्वेदिक संस्थान की स्थापना की गई थी। लेह में सोवा–रिग्पा से जुड़ी रिसर्च और दूसरे अध्ययन के लिए राष्ट्रीय सोवा रिग्पा संस्थान विकसित करने का काम जारी है। आज गुजरात और राजस्थान के जिन दो संस्थानों को अपग्रेड किया गया है, वो भी इसी सिलसिले का विस्तार है।

कहते हैं जब कद बढ़ता है तो दायित्व भी बढ़ता है। आज जब इन दो महत्वपूर्ण संस्थानों का कद बढ़ा है, तो मेरा एक आग्रह भी है। देश के प्रीमियम आयुर्वेदिक संस्थान होने के कारण अब आप और आप सब पर ऐसे पाठ्यक्रम तैयार करने की जिम्मेदारी है जो International Practices के अनुकूल और वैज्ञानिक मानकों के अनुरूप हों। मैं शिक्षा मंत्रालय और UGC को भी आग्रह से कहूंगा कि आयुर–भौतिकी और आयुर–रसायन शास्त्र जैसे विषयों को लेकर नई संभावनाओं के साथ काम किया जाए। इससे रिसर्च को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा देने के लिए Integrated Doctoral और Post Doctoral Curriculum बनाने के लिए काम किया जा सकता है। आज मेरा देश के प्राइवेट सेक्टर, हमारे स्टार्ट अप्स से उनसे भी एक विशेष आग्रह है। देश के प्राइवेट सेक्टर, नए स्टार्ट् अप्स को आयुर्वेद की ग्लोबल डिमांड को स्टडी करना चाहिए और इस सेक्टर में होने वाली ग्रोथ में अपनी हिस्सेदारी सुनिश्चित करनी चाहिए। आयुर्वेद की लोकल शक्ति के लिए आपको दुनिया भर में वोकल होना है। मुझे विश्वास है कि हमारे साझा प्रयासों से आयुष ही नहीं बल्कि आरोग्य का हमारा पूरा सिस्टम एक बड़े बदलाव का साक्षी बनेगा।

आप भली भांति ये भी जानते हैं कि इसी साल संसद के मॉनसून सत्र में दो ऐतिहासिक आयोग भी बनाए गए हैं। पहला– National Commission of Indian System of Medicine और दूसरा National Commission for Homoeopathy. यही नहीं, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी भारत की मेडिकल एजुकेशन में Integration की अप्रोच को प्रोत्साहित किया गया है। इस पॉलिसी की भावना है कि एलोपेथिक Education में आयुर्वेद की बेसिक जानकारी जरूरी हो और आयुर्वेदिक एजुकेशन में एलोपेथिक Practices की मूल जानकारी जरूरी हो। ये कदम आयुष और भारतीय पारंपरिक चिकित्सा पद्धति से जुड़ी शिक्षा और रिसर्च को और मजबूत बनाएंगे।

21वीं सदी का भारत अब टुकड़ों में नहीं, होलिस्टिक तरीके से सोचता है। हेल्थ से जुड़ी चुनौतियों को भी अब होलिस्टिक approach के साथ उसी तरीके से ही सुलझाया जा रहा है। आज देश में सस्ते और प्रभावी इलाज के साथ–साथ Preventive Healthcare Wellness पर ज्यादा फोकस किया जा रहा

है। आचार्य चरक ने भी कहा है– स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणं, आतुरस्य विकार प्रशमनं च! यानि स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना और रोगी को रोगमुक्त करना, ये आयुर्वेद के उद्देश्य हैं। स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ ही रहे, इसी सोच के साथ ऐसे हर कदम उठाए जा रहे हैं, जिससे बीमार करने वाली स्थितियां दूर हों। एक तरफ साफ–सफाई, स्वच्छता, शौचालय, साफ पानी, धुआंमुक्त रसोई, पोषण इन सभी पर ध्यान दिया जा रहा है, तो वहीं डेढ़ लाख Health और Wellness Centers हिन्दुस्तान के कोने–कोने में तैयार किए जा रहे हैं। इनमें विशेष तौर पर साढ़े 12 हजार से ज्यादा आयुष Wellness Centers पूरी तरह आयुर्वेद को समर्पित हैं, आयुर्वेद से जुड़े बन रहे हैं।

Wellness का ये भारतीय दर्शन आज पूरी दुनिया को आकर्षित कर रहा है। कोरोना के इस मुश्किल समय ने फिर दिखाया है कि Health and Wellness से जुड़ी भारत की ये पारंपरिक विद्या कितनी कारगर है। जब कोरोना से मुकाबले के लिए कोई प्रभावी तरीका नहीं था, तो भारत के घर–घर में हल्दी, दूध और काढ़ा जैसे अनेक Immunity Booster उपाय बहुत काम आए। इतनी बड़ी जनसंख्या, इतनी घनी आबादी और ऐसा हमारा देश, अगर आज संभली हुई स्थिति में है, तो उसमें हमारी इस परंपरा की भी अहम भूमिका रही है।

कोरोना काल में पूरी दुनिया में आयुर्वेदिक प्रोडक्ट्स की मांग तेजी से बढ़ी है। बीते साल की अपेक्षा इस साल सितंबर में आयुर्वेदिक उत्पादों का निर्यात लगभग डेढ़ गुना, करीब–करीब 45 प्रतिशत बढ़ा है। यही नहीं मसालों के निर्यात में भी काफी बढ़ोतरी दर्ज की गई है। हल्दी, अदरक ऐसी चीजें जो immunity booster मानी जाती हैं, उनका निर्यात अचानक इस तरह बढ़ना ये दिखाता है कि दुनिया में आयुर्वेदिक समाधानों और भारतीय मसालों पर विश्वास कितना बढ़ रहा है। अब तो कई देशों में हल्दी से जुड़े विशेष पेय पदार्थों की भी प्रचलन बढ़ रहा है। आज दुनिया के प्रतिष्ठित मेडिकल जर्नल्स भी आयुर्वेद में नई आशा, नई उम्मीद देख रहे हैं।

कोरोना के इस काल में हमारा फोकस सिर्फ आयुर्वेद के उपयोग तक ही सीमित नहीं रहा। बल्कि इस मुश्किल घड़ी का इस्तेमाल आयुष से जुड़ी रिसर्च को देश और दुनिया में आगे बढ़ाने के लिए किया जा रहा है। आज एक तरफ भारत जहां वेक्सीन की टेस्टिंग कर रहा है, वहीं दूसरी तरफ कोविड से लड़ने के लिए आयुर्वेदिक रिसर्च पर भी International Collaboration को तेजी से बढ़ा रहा है। अभी–अभी, हमारे साथी श्रीपाद जी ने बताया कि इस समय सौ से ज्यादा स्थानों पर रिसर्च चल रही हैं। यहां दिल्ली में ही अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान ने, जैसा अभी आपको विस्तार से बताया गया, दिल्ली पुलिस के 80 हजार जवानों पर Immunity से जुड़ी रिसर्च की है। ये दुनिया की सबसे बड़ी Group Study हो सकती है। इसके भी उत्साहजनक परिणाम देखने को मिले हैं। आने वाले दिनों में कुछ और अंतर्राष्ट्रीय परीक्षण भी शुरू किए जाने है।

आज हम आयुर्वेदिक दवाओं, जड़ी–बूटियों के साथ–साथ इम्यूनिटी को बढ़ाने वाले Nutritious Foods पर भी विशेष बल दे रहे हैं। मोटे अनाज यानि मिलेट्स का उत्पादन बढ़ाने के लिए आज किसानों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। यही नहीं गंगा जी के किनारे और हिमालयी क्षेत्रों में ऑर्गेनिक उत्पादों को बढ़ावा दिया जा रहा है। आयुर्वेद से जुड़े हुए पेड़–पौधों लगाने पर बल दिया जा रहा है, कोशिश ये है कि दुनिया की Wellness में भारत ज्यादा से ज्यादा कंट्रीब्यूट करे, हमारा Export भी बढ़े और हमारे किसानों की आय में भी बढ़ोतरी हो। आयुष मंत्रालय, इसके लिए एक व्यापक योजना पर काम कर रहा है। आपने भी देखा होगा कि कोविड महामारी शुरू होने के बाद, आयुर्वेदिक जड़ी–बूटियाँ जैसे अश्वगंधा, गिलोय, तुलसी आदि की कीमतें इसलिए बढ़ी क्योंकि मांग बढ़ी, लोगों का विश्वास बढ़ा। मुझे बताया गया है कि इस बार अश्वगंधा की कीमत पिछले साल के मुकाबले दोगुनी से भी ज्यादा तक पहुंची है। इसका सीधा लाभ इन पौधों, इन जड़ी–बूटियों की खेती करने वाले हमारे किसान परिवारों तक पहुंचा है। हालांकि अनेक जड़ी–बूटियां हैं, जिनकी उपयोगिता के बारे में अभी भी हमारे यहां जागरूकता और बढ़ाने की जरूरत है। ऐसे लगभग 50 औषधीय पौधे हैं, जिनकी सब्जियों और सलाद के रूप में खूब उपयोगिता है। ऐस में कृषि मंत्रालय हो, आयुष मंत्रालय हो या फिर दूसरे विभाग हों, सभी के संयुक्त प्रयासों से इस क्षेत्र में बड़ा परिवर्तन आ सकता है।

आयुर्वेद से जुड़े इस पूरे इकोसिस्टम के विकास में, देश में हेल्थ एंड वेलनेस से जुड़े टूरिज्म को भी बढ़ावा मिलेगा। गुजरात और राजस्थान में तो इसके लिए असीम संभावनाएं भी हैं। मुझे विश्वास है कि जामनगर और जयपुर के ये दोनों संस्थान इस दिशा में भी लाभकारी सिद्ध होंगे। एक बार फिर से आप सभी को बहुत–बहुत बधाई।

बहुत–बहुत धन्यवाद...!!

SURGICAL PROCEDURES IN SUSHRUTA SAMHITA

- R. K. Singh[1]
e-mail : ravikumarsinghshalya@gmail.com

ABSTRACT :

The Sushruta Samhita is an Ayurvedic text written by legendary Sushruta. There is a general impression that Sushruta Samhita is only an ancient Indian Ayurvedic text book of surgery. Sushruta Samhita contains 184 chapters and description of 1120 illnesses, 700 medicinal plants, a detailed study on anatomy, 64 preparations from mineral sources and 57 preparations based on animal sources. It still retains the land mark position in the field of surgical texts. In addition to his worldwide known work of historical significance on plastic surgery, he also made similar unique contributions on various aspects of medicine, fracture and dislocations, urinary stones, skin diseases including leprosy, Pancha Karma (Purification) procedures, toxicology, pediatrics, eye diseases, psychiatry, obstetrics and gynaecology, etc. A very limited conceptual work has been performed on the selected chapters of Sushruta Samhita. Therefore a review of conceptual study has been carried out on the various surgical concepts of Sushruta Samhita. Outcome of this study shows Sushruta Samhita is written in the aphorism form and the techniques described in it are eminently in line with technical abilities of the times. It is need of the hour to explore the hidden truth by decoding the versions of the texts.

Key Word: *Ayurveda, Sushruta Samhita, Shalya tantra, Surgical Procedures.*

INTRODUCTION:

The ancient Indian medical science can be traced back from the Vedic period. The Vedas are considered to be the first record of the ancient knowledge and civilization in the world. Out of the four Vedas the maximum description of the medical science is included in the 'Atharvaveda', the penultimate source of Ayurveda[1].

Ayurveda later developed as a separate system of medical knowledge and has given the status of Upaveda. The 'fifth Veda[2]' in the next stage of its growth, Ayurveda specialized into eight[3] branches such as Kayachikitsa, Shalya, Kaumar Bhritya etc. and separate treatise were written on the each branch by different authors who were further revised and edited by their disciples and followers. Among the available literatures three

[1]*M.D.(Ayurveda), Ph.D., Medical Officer, Rajkiya Ayurveda Chikitsalaya, Chunar, Mirzapur, U.P.*

Samhitas are the chief source of knowledge on Ayurveda- Charaka, Sushruta and Ashtanga Hridaya.

The Sushruta Samhita was written in the holy city of Kashi (Varanasi)[4] some times around 1000 B.C. Sushruta was primarily a surgeon and recognized as the "The Father of Surgery" in the world.

Aim & Objectives

1. To evaluate, elaborate and discuss the various surgical concepts of Sushruta Samhita.
2. To decode the various hidden surgical procedures of the Sushruta Samhita and co-relate with modern technological steps of surgery.

Material and Methods

All sorts of references has been collected and complied from Ayurvedic classics and available commentaries like- Sushruta Samhita, Astanga Hridaya, Astanga Sangraha, Charaka Samhita, Harita Samhita, Bhava Prakasha, Chikitsa Sangraha Granth, Kashyapa Samhita, Bhela Samhita and Sharangadhara Samhita etc.

We have also referred the modern text books of surgery like Bailey and Love, K. Das, Farquharon's Text book of operative surgery, Primary Surgery vol-1(oxford medical publication) and similar other books and also searched various websites related to surgery.

Observation

By the study it elucidates this fact that the Sushruta Samhita was a 'Text book of surgery' in those periods and were studied by the students of medicine for nearly two thousands years back, much like the medical students of today studied "Bailey and Love's Textbook of Surgery'.

The Sushruta Samhita is in two parts, the Purva-Tantra in five[5] sections and the Uttara-Tantra. Apart from Shalya and Shalakya, these two parts together encompass the other specialities like medicine, pediatrics, geriatrics, toxicology, aphrodisiacs and psychiatry. Thus the whole Samhita, devoted as it is to the science of surgery, does not fail to include the salient portions of other disciplines too. In fact, Sushruta emphasizes in his text that unless one possesses enough knowledge of relevant sister branches of learning, one cannot attain proficiency in one's own subject of study. The Samhita is thus an encyclopedia of medical learning with special emphasis on Shalya and Shalakya. The Sutra-Sthana, Nidana-Sthana, Sarira-Sthana, Kalpa-Sthana and Chikitsa-Sthana are the five sections of the Purvatantra containing one hundred and twenty[6] chapters. Incidentally, the Agnivesa-Tantra known better as the Charaka Samhita and the Astanga Hridaya of Vagbhata also contain one hundred and twenty chapters in all. The Nidana-Sthana gives the knowledge of aetiology, signs

and symptoms of important surgical diseases. The rudiments of embryology and the anatomy of the human body along with instructions for venesection (cutting of veins), the positioning of the patient for each vein, and protection of vital structures (Marmas) are dealt with in the Sharira-Sthana. This also includes the essentials of obstetrics. Principles of management of surgical conditions including obstetrical emergencies are mentioned in the Chikitsa-Sthana, which also includes a few chapters on geriatrics and aphrodisiacs. The Kalpa-Sthana is mainly Visa-Tantra, dealing with the nature of poisons and their management. The Uttara-Tantra contains the specialities, namely Shalakya, Kaumarabhritya, Kayacikitsa and Bhutavidya. The entire Uttara-Tantra has been called Aupadravika[7] since many of the complications of surgical procedures as well as fever, dysentery, cough, hiccough, worm infestation, anaemia, jaundice, etc., are briefly described here. The Shalakya-Tantra portion of the Uttara-Tantra contains various diseases of the eye, ear, nose, throate and head. Thus the whole Samhita is a comprehensive treatise on the entire medical discipline.

On the whole, the entire Samhita is a complete work on medicine with special attention to Shalya and Shalakya Tantras. As a text-book, it is unrivalled in respect of composite teaching of the subject of surgery with reference to all allied branches of medical learning required by a surgeon. It is a forerunner of Vagbhata's Astanga Sangraha.

He had performed many surgeries in those period covering all fields of surgical branches like general surgery, eye, E. N. T., Oro-Dental, pediatrics, obstetrics, Urology, Orthopedics etc. The contributions of Sushruta are not only limited to surgical field but also extended up to the anatomy, embryology, gynics, obstretics, pediatrics, toxicology, medicine. Some of the examples of surgical techniques performed by him and other contributions to the surgical fields are narrated in brief here:

Nasa-Sandhana[8] (Rhinoplasty)

The Rhinoplasty and other reconstructive surgeries were first mentioned by the Sushruta in his text, and established as a remarkable milestone in the field of plastic surgery. He had taken a green leaf of a tree and trimmed it as the shape and dimension of defect of nose. Then he used the cut leaf to raise the flap of same size and dimensions from the side of the cheek. The free end of the flap is turned toward the nose and apposed on the defect exactly after freshing the edges of the defect. The two tubes were inserted under the flap to keep the nostrils open. The powders of Pattanga or Rakta Chandana (*Pterocorpus santalinus*[9]),

Yashtimadhu (*Glycyrrhiza Glabra*[10]) and Rasanjana (*Barberis Aristata*[11]) was dusted over the wound and covered with the cotton pad. The Sesamum (*Sesamum Indicum*[12]) oil was used to soak the pad as it required[13]. When the healing was completed, the flap should be carefully checked. Any excess growth of tissues should be trimmed.

Karna-Sandhana [14](Lobuloplasty)

The Sushruta had advised to perform the reconstructive surgeries of ear lobules in the various defects either caused by congenital reasons or traumatic reasons.15 techniques of repair of torn ear lobules (lobuloplasty) had been given by the Sushruta even though in the absence of ear lobe by the flap of cheek[15]. The surgeon should tailor the reconstructive technique to suit the specific deformity. For example, when the ear lobe flaps are congenitally absent, a lobe can be created by incising above the level of tragus and turning down the incised flap.

Ostha Sandhana [16](Repair of Hare lip)

The description of repair of deformed lip is given in the same chapter as such as given for the Nasa-Sandhana. A surgeon who is expert in the Nasa-Sandhana can perform the Ostha-Sandhana. The detailed procedure of repair is not clearly quoted or missing in the text.

Karna-Vedhana [17](Ear puncture)

The Sushruta had described the piercing of the children's ear lobe with a needle or awl on the auspicious day and time with hymn is known as Karna-Vedhana Samskara (custom).

Establishment of various Surgical Techniques

He had given various suggestions to make the incision. The incision line should be preferred in the line of hair which heals quickly. The incision should be made in a single stroke and with applying appropriate pressure on the knife to keep the edges sharp of incised tissue. The counter incision or multiple incisions are required where the pus is not properly drained in a single incision. Sushruta also discusses certain surgical conditions of ano-rectal region; he has given all the methods of management of both hemorrhoids and fistulae. Different types of incision to remove the fistulous tract as Langalaka (T-shaped), Ardhalangalaka (L-shaped), Sarvatobhadraka (circular), Gothirthaka (half moon) and Kharjurapatraka [18](serrated) are described for adoption according to the type of fistula.

Sushruta was well aware of the urinary stones, their varieties; the anatomy of urinary bladder along with its relations is well recorded in the chapter 'Ashmarichikitsitopakramah' (Chapter on urinary stones). Varieties of stones, their signs and symptoms, the method of extraction (by perineal lithotomy), and

operative complication were given in detail. He elaborated the details of perineal lithotomy[19] and post operative wound management which may be the first reference of surgical management of calculus in the history of surgery.

Apart from the above, surgery (intestinal sutures) for Baddha-Gudodara[20] (intestinal obstruction), Chidrodara[21] (perforated intestines), accidental injuries to Aasaya (abdomen) in which protrusion of omentum occurs are also described along with their management. The operations like couching for cataract, caesarian section to save a baby's life and if the mother dies in the labour and other surgical procedures are established by the Sushruta for the first time.

Treatment by Agni (Thermal) & Kshara (Alkali), Jaluaka and Classification of Burns

The Sushruta is the person which is given the importance to Agni[22] & Kshara[23] for therapeutical purposes in the form of a separate modality. For various disorders of mainly involving musculoskeletal system, Sushruta advocated the utility of several forms of thermal cauterization by using Dahana Upakaranas[24] (tools for Agni Karma). He had also elaborated the depth and intensity of burn in his classifications of burn as Plushta Dagdha (singeing), Durdagdha (blister formation), Samyaka Dagdha (therapeutic) and Atidagdha[25] (severe or deep) and their management. For the first time the symptoms, sign & treatment of Dhoomopahata[26] (dyspnoea by smoke) is also described by the Sushruta. Kshara (Caustic Alkali) utility in therapeutics is a unique kind of its own. As Sushruta had discussed various usage[27] forms of Kshara in different ailments, like to stop the bleeding, for healing an ulcer, for necrose haemorrhoids, for cutting the tract in fistula in ano without injuring the other structures etc. Likewise Kshara, Agni[28] & Jauloka[29] *(*Leeches*)* are also used as para-surgical procedure in Ayurvedic surgical science for various ailments.

Management of Sadyo-Vrana (traumatic wounds)

On the subject of trauma, Sushruta speaks of six[30] varieties of accidental injuries naming (i) Chinna (excised), (ii) Bhinna (incised), (iii) Viddha (punctured), (iv) Kshata (lacerated), (v) Pichchhita (crushed) and (vi) Ghrishta (abrasion) encompassing almost all parts of the body and their probable causative agent or weapons. As war was the major cause of injury in the past, the name Shalya-Tantra[31] for this branch of medical science is derived from the Shala[32] *(*arrow*)*, which in fights is used to be lodged in the body of the enemy soldiers. He emphasizes that removal of foreign bodies is fraught with certain complications, if the seat of the Shala or Shalya be a Marma[33] *(*vital spots*)*.

Asthi-Sandhi Bhagna Chikitsa (Fracture and Displacement of Bone and its management) Sushruta also gives classification of the bones and their reaction to injuries. Varieties of dislocation of joints (Sandhimukta[34]) and fractures of the shaft (Kandabhagna[35]) are given systematically. He classifies and gives the details of the six types of dislocations and twelve varieties of fractures. He gives the principles of fracture treatment, viz., traction, manipulation, appositions and stabilization[36] the same method is still practiced in the modern orthopedics.

Anatomical Dissection

The Sushruta was the first person who had established the preservation of deceased and cadaver dissection[37] in the scientific manner to learn the medical science. For the dissection of cadaver, the use of brushes made of bamboo is shows the highness of his knowledge in the anatomy.

Practical Training[38]

Before proceeding to surgery on the human being the surgical demonstrations technique of making incisions, probing, extraction of foreign bodies, cauterization either by Kshara or Agni, tooth extraction, scarification, excisions, trocars for draining abscesses, saws for amputations on various natural fruits, dead woods and clay models had been established by the Sushruta. To obtain proficiency and acquiring skill and speed in these different types of surgical manipulations, Sushruta had devised various experimental modules for trying each procedure. For example, incision and excision are to be practiced on vegetables and leather bags filled with mud of different densities; scraping on hairy skin of animals; puncturing on the vein of dead animals and lotus stalks; probing on moth-eaten wood or bamboo; scarification on wooden planks smeared with beeswax, etc.

Arrest of Bleeding

The bleeding occurs just after giving the incision or performing any surgical procedure by sharp instruments or by accidental injuries, either it may be minor or major. To stop or arrest the bleeding Sushruta has pointed out four methods to stop the bleeding naming as (i) Sandhana (ii) Skandana (iii) Dahana (iv) Pachana[39]. In the Sandhana steps he had advised to make the of apposition of the cut edges with stitches, in the Skandana to use cold things like snow or ice which causes thickening of blood by coagulation, in the Dahana by cauterisation of vessels with Kshara (chemicals) or Agni (heat), in Pachana, application of styptic decoctions to contract the vessels locally by application of styptic decoctions. In the loss of blood he had also advised to use the drugs or diet by which we can increase the blood. In the major loss of blood

Charaka advises to give the blood of goat or buffalo or deer or cow through oral or rectal route[40].

Concepts of Vrana (Ulcer)

The Vrana or injury, says Sushruta, involves breakdown of body-components and may have one or more of the following seats for occurrence, viz., skin, flesh, blood-vessels, sinews, bones and joints, internal organs of chest and abdomen and vital structures. Classically Vrana (wound) is the ultimate explosion of the underlying pathological structure. It is, in Sushruta's words, the sixth stage of a continuous process, which starts with Shotha (inflammation). Sushruta says that in the first stage, the ulcer is unclean and hence it is called as Dusta-Vrana [41](un-healthy wound). By proper management it becomes a clean wound, a Shuddha-Vrana[42] *(*clean or healthy wound*)*. Then there is an attempt at healing and is called Ruhyamana-Vrana[43] (healing wound) and when the ulcer is completely healed, it is a Rudha-Vrana [44](healed wound).

Eight types of Basic Surgical Procedures[45]

Sushruta describes eight types of surgical procedures: Excision (Chedana) is a procedure whereby a part or whole of the limb is cut off from the parent. Incision (Bhedana) is made to achieve effective drainage or exposure of underlying structures to let the content out. Scraping (Lekhana) or scooping is carried out to remove a growth or flesh of an ulcer. The extraction (Aharana) is carried out to remove the foreign body or tartar of teeth, etc. The veins, hydrocele and ascitic fluid in the abdomen are drained by Vyadhana (puncturing) with special instrument. The sinuses and cavities with foreign bodies are probed (Esana) for establishing their size, site, number, shape, position, situation, etc. Sravana (blood-letting) is to be carried out in skin diseases, Vidradhis(abscesses), localized swelling, etc. In case of accidental injuries and in intentional incisions, the lips of the wound are apposed and united by Sivana (stitching).

Suture Materials

The suture materials of absorbable/ non-absorbable and synthetic/ natural were described first time by the Sushruta. According to Sushruta the bark of Asmantaka [46](*Bauhinia Racemosa*) trees, thread of Shana (*Corchorus capsularis[47])*, silk thread, tendon, hair or fibers of Murva (*Marsdenia tenacissima*[48]) and Guduchi (*Tinospora cardifolia*[49]) are the suture materials. The Sushruta had also used the black ants (*Lasius niger*[50]) during the suturing of intestinal anastomosis in the case of Chidrodara [51](intestinal perforation) is probably the first reference of absorbable type of suture material in history of medicine.

Use of Suturing Needles[52]

The Sushruta had used the suturing needles of different caliber for different purposes. These suturing needles were circular, two finger breadths wide and straight, and triangular bodied three-breadths wide. The circular needles which have round body are used at the places where the tissues are thin and in the joints. These needles can be compared to atraumatic needles of contemporary science. Where the tissues are thicker, it should be straight, triangular bodied (cutting) and three finger breadths long. The semi-circular needles are used for the vital spots like testicles and abdominal viscera.

Different types of Dressing[53] & Dressing Schedule[54]

The Sushruta had described the various types of dressing and dressing materials for the first time to cover the wound at different sites of the body. The 14 types of bandages and their applications are the unique features of Samhita. They are named either on the basis of their shape or use. These are Kosha (sheath) applicable around thumb or fingers, Dama (sling), Swastika (spica), Anuvellita (spiral), Muttoli (winding), Mandala (circular), Sthagika (stump), Yamaka (twin bandage), Khatva (four tailed bandage), China (eye bandage), Vibandha (many tailed bandage), Vitana (cephalic bandage), Gophana (T bandage), Panchangi (five tailed bandage). During the bandaging the use of cotton to secure the wound from friction is the original theme of Sushruta and it is still in practice. The change of dressing at regular interval is the prime thought of Sushruta to protect the wound from infection. The period for change of dressing[55] in winter on every 3rd day and in summer season daily was the idea of Sushruta.

Management of Pain

Patients were advised to take food before undergoing surgical procedure in order to withstand the pain during operation. In the old era there were no well established anaesthetic drugs to alleviate the pain during surgery. The Sushruta was the first person had used the alcohol[56] to alleviate the pain during surgery. He had also used the Bhanga[57] (*Cannabis sativa)* during the surgery. Although the use of Henbane[58] *(Hyoscyamus niger)* and of Mohani Churna *(*powder*)* [59]are reported at a later period.

Surgical Instruments and their Fabrication with Maintenance of Edges

The Sushruta was the first person who had described the 101 types of blunt (Yantras) [60]and 20 types of sharp (Shastras[61]) instruments and their fabrication by different metallic element chiefly by iron and bronze. The unique classification of surgical instruments like

the instruments used to facilitate the surgery known as Yantra and while the instruments used directly for the surgical procedures, known as Shastras. He had also considered the importance of hand as the most important (Pradhana[62]) Yantra, for without it no operation can be performed. He has not only described the types of Shastras but also had given the emphasis on the necessity to maintain the sharpness of edges. So he had advised to make the Dharasanthapana[63] (sharpening) and Payana[64] (tempering) at regular interval to perform the surgery hasselfree. Even though Sushruta was very aware regarding the storage and safety of Shastras and had develop the Shastrakosh[65] (instrument box or pocket), either of leather or bark.

Code of Ethics for Teachers and as well as for Students[66]

The model code for the practice of surgery was established by Sushruta and he had advised to take the permission from the king[67] before initiating the medical practice which can be correlated to registration of medicos in today's era. For the first time the ethics for student and teacher were also described by the Sushruta in his text.

Description of *Marmas (*Vital spots*)*

The Sushruta had described 101 numbers of Marmas [68](Vital spots) in the body which causes fatal result on injury, either sudden death or subsequent deformity of organ or body. The anatomical landmark of each and every Marma had their degree of fatality is the unique feature of Sushruta of its own kind. In the surgical procedures, accidental injuries and in martial art, it plays a major role.

DISCUSSION

The surgical procedures given in the Sushruta Samhita are in the basic form and still relevant to modern counter part. The Nasa Sandhana (rhinoplasty) was started from the time of Sushruta and later on it spread all over the world. The taking of green leaf to measure the raw area of nose to take the exact size of pedicle graft from the adjacent cheek of both the side was the very accurate method to incise the surrounding tissue without wasting any live tissue. Sushruta knows the viability of pedicle graft. Above operative procedure is very easy, successful and still relevant in today's era. The methods of Karna-Sandhana described in Sushruta Samhita are very elaborative and cover all types of lobular defect either congenital or traumatic. The Sushruta had given the method to reconstruct the ear lobe in absence of ear lobe by the use of pedicle graft taken from cheek. This method of reconstruction is even popular in these days and the recent advancement in the methodology is based on the Sushruta's method.

The repair of Hare lip was started from the period of Sushruta. As he suggested

that there is no need of any tubes as needed in the repair of Nasa Sandhana. The detail of repair of Hare lip was not described by the Sushruta but as he versed that who is expert in the Nasa and Karna Sandhana can perform this surgery. The verse suggests that the surgery for Ostha-Sandhana was very popular but for some unknown reason some texts may be missing.

The Karna- Vedhana given by the Sushruta is still very popular amongst Hindus. The method to locate the site of ear puncturing is peculiar. As he suggest, to pierce the ear lobe through 'Daivakrita Chidra[69] (a hole created by God) is very particular place for puncturing. At the puncturing of Daivakrita Chidra there will be no damage to blood vessels, nerves and muscles. To locate this hole, one can direct the ear lobule in front of sunlight and the maximum illumination of light is the confirmation. Instead of sun light, any light source can be used. This is very unique description of Sushruta and there are no such type of relevant description is found elsewhere.

Sushruta knows the every steps of any surgical technique and his visions regarding every aspect were very clear. As he suggests to make an incision in the single stroke[70] of knife which is still true and good in surgical practice. In the single stroke of knife the very sharp margins of wounds are made which causes perfect approximation of edges and heals quickly with least scar tissue. The Sushruta's view to make the incision in the line of hair[71] (Langer's line) is still true and proved, this fact that the incision made in the line of Langer's heals quickly. As Sushruta quotes the various types of incisions in the surgery of fistulous tract e.g. Sarvatobhadraka (circular), Lagalaka, Ardhalangalaka and Chandrardha. Due to standardization and wide recognition of Kshara Sutra[72] therapy in the fistula in ano, the above incisions are less practiced and the Kshara Sutra therapy dominates other modes of treatment. Less number of recurrence cases and early mobilization of patients in these cases make this therapy gaining popularity and uplifting the glory of Ayurvedic surgical science. The Ardha-Chanrardha[73] (semicircular) incision used in the abscess or growth situated below the areola[74] of the breast is similar to free hand incision of contemporary science. The abscess which opening lies against the gravity, in such cases Sushruta advocates the utility of second or multiple incisions which are in nowadays called as counter[75] incisions. The use of multiple incisions is still relevant in the abscess of parotid gland[76].

The technique for the perineal lithotmy for the vesical calculus is no more relevant now but the new technique of lithotomy i.e. suprapubic lithotomy[77] is the advancement of perineal technique. The extraction of stone from the urinary

bladder by pushing the stone upward through inserting the finger in rectum is still helpful in the operation of vesical calculus and suprapubic prostatectomy.

The operation of caesarian section[78] is the modified form of Moodhagarbha Chikitsa[79] in which the surgery was performed to save the mother, when the foetus becomes dead. But in the ceasarian section both the mother and child can be saved.

The treatment by the Kshara, Agni and Jalauka are the para-surgical methods for a person who's afraid of surgery as alternative modalities of treatment. The unique role of Kshara in the piles[80] and well known treatment by Kshara-sutra in fistula in ano are later accepted by the one and all. The use of Agni for the removal of extra growth of skin and other minor ailments[81] was established by Sushruta. The technique to use the Agni to stop the bleeding during surgery is the original concept of Sushruta which is later modified by the modern scientist to develop in the form of electric cautery.

The types of Sadyo-vrana (Traumatic Wound) are the six which are unchanged in the modern text book of surgery. The management of these wounds required immediate attention of surgeon as it is already shown by the Sushruta.

The Chikitsa of Asthi and Sandhi Bhagna was described by Sushruta under the heading of Bhagna. He had kept both the Sandhi Bhagna and the Asthi Bhagna (Kanda Bhagna) in a single heading. The symptoms, sign are still relevant while their basic principles of management are remained unchanged even these days like traction, manipulation, apposition and stabilization. The newer techniques have been added in the modern orthopedic surgery but without intervening the basic concepts of Sushruta's views. The concepts of physical rehabilitation after the full recovery from the fracture and dislocation are still followed by the modern orthopaedic surgeons. Now this rehabilitation treatment is now becomes a new branch of medical science known as physio-therapy department.

For a medico, anatomical knowledge is vital for which he has to depend on dead bodies for dissection. Sushruta had explained the method of preserving the deceased body and preparation of body before dissection. This ancient method of preservation and dissection depicts that ancient medical science of India is no where lesser to when compared to other systems of medicine.

The surgical procedures are to be practiced before going on the live body. This concept of Sushruta is still relevant is followed by the modern medical practitioner by performing the surgery on dog and on dummy and natural objects

which are having the same features. Even though, before entering in the field of practice, the internship and house job are serving the same purpose.

The Sushruta's views on the arrest of bleeding are still remained unchanged. Apart from the use of cautery, he explains use of astringent herbs through local and oral administration which is similar to conventional styptic drugs of present era.

The concepts of Vrana (ulcer) are remained unchanged. As the Sushruta classified it into Dusta (unclean), Suddha (clean), Ruhamana (healing) and Ruhya (healed). These stages of Vrana are clinically proved, which falls in the path of wound healing. As Sushruta says that just after the making of wound either by trauma or by surgeon goes under Shopha (inflammation) which is required up to some extent for healing. This fact is also appreciated by modern scientists.

The 8 types of surgical procedures like Chedana, Bhedana, Lekhana, Aharana, Vyadhana, Sravana, Eshana and Seevana are the basic of any surgical technique and it is remained unchanged till now. All surgical procedures are bound by these 8 varieties. There may be conflict on numbers of surgical procedures by some authors but the procedures are unchanged. These surgical procedures are still in use in these days.

The Sushruta was aware of different types of suturing materials and suturing needles. As he described the various varieties of suturing material like non-absorbable, absorbable, synthetic and natural. In the operation of Chidrodara, the anastomosis of intestine by clinching the head of the black ant is the basic idea of Sushruta is the best example of usage of biological substance as absorbable suture material. This is still useful in modified form like in the place of black ant we use the absorbable suture like catgut etc. This signifies the concept of absorbable suture material in gut repair was known to ancient Indian surgeons long back before the invention of catgut etc. The use of various forms of suturing needle in accordance with the depth of the tissues is well known to Sushruta. These all facts help us to develop the new technique and devices for the suturing needle like atraumatic needle etc on which further research is expected.

The bandaging of wounds is still relevant to safeguard the wound from the infection, either from the trauma or friction or insects like flies[82]. The types of materials and dressing are the key part of the post operative care of any surgery or wound. The Sushruta had given the indication of type of bandage which is still relevant in modern era on the modern counterpart. The interval to change the dressing of the wound either in the winter or summer is still same as was

mentioned in Sushruta. The concept of Sushruta not to do the bandaging in the wound of Agni Dagdha[83] is remained same in this modern era.

The knowledge of alleviating the pain during the surgery was started from *Sushruta* and later this knowledge flourishes by modern surgeons to establish it as a separate branch of medical science and known as Anesthesiology. The use of Pragbhukta[84] (full stomach) in the minor surgery & Abhuktavata [85](empty stomach) in major surgery is remained same as earlier to alleviate the pain and to check the vomiting and other complications respectively.

The Yantras (blunt instrument) and Shastras (sharp instruments) are the main tools of surgeon and the Sushruta had the knowledge of 101 Yantras and 20 Shastras. Even though he was agree with the fact that if the more instruments are required then it can be developed as per need[86]. The shape of the Yantras and Shastras are further modernized to compete with the surgery in modern era but the basic theme and functions are remained same as before. The classification of instruments in to the Yantras (blunt instruments) and Shastras (sharp instruments) is the basic concepts of Sushruta. No any such type of classification of instrument is found in the modern surgical text books. As per Sushruta the hand is the main and important instrument amongst all which hold the key position till date. Without the hand any instrument can not be hold. The tempering and sharpening of edges of Shastras are also the view of Sushruta which remains unchanged till date. In present time to keep the sharp instruments free from micro-organism and rust, they are kept into the anti-septic solutions or specially designed instruments chambers is the forerunner idea of Sushruta. He had even given the specifications for the Shastra Kosha *(*instrument pocket or box) where instruments are to be kept.

In today's the model codes for practicing surgery or any other branch of medical science at the particular place registration done by the competent authority is essential from respective state government while in ancient times, the physician has to seek permission from the king. Without the registration no one can practice and if caught may face the legal prosecution.

The knowledge of Marmas is still relevant in present era as surgeons always have to take extra care to save these vital points while performing any surgical procedure else which it may end up in morbidity or mortality.

CONCLUSION

- The techniques of Nasa Sandhana, Karna Sandhana, Ostha Sandhana and other surgical procedures described in the Sushruta Samhita are eminently in line with the technical abilities of the times.
- The para surgical procedures like Agnikarma, Raktamokshana and Kshara karma are gaining popularity nowadays, in the same way other main surgical techniques which are not been tested should be assessed taking due co operation from other system of surgical science.
- The Ayurvedic literatures are preserved in the Sanskrit language, and originally in the form of manuscripts written on birch bark; palm leaves or paper. These literatures should be explored which may further nourish the field of surgery and other branches of medical sciences. The versions of Sushruta Samhita is itself indicates that these descriptions are in form of surgical procedures and teaching methods of ancient era.
- It's the need of the hour to establish various super specialties of Shalya Tantra in order to bring back the glory which has lost decades ago. The technical refinements of surgical skill are possible and it should be evolve.
- Sushruta had given the base for the surgery and opened the door to develop the field, now its younger generation's duty to uplift this branch of medicine.

REFERENCES

1 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-2.

2 Kashyapa Samhita commentary by Pandit Hemaraja Sharma, Vimana Sthana, Chaukhamba Sanskrita Sansthana, p-62.

3 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-2.

4 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-1.

5 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-12.

6 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana, p-12.

7 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-14.

8 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-80.

9 Draya Guna Vigyan vol-2, by P. V. Sharma, Chaukhamba Bharati Akadami, Varanasi, Ed-2005,P-718.

10 Draya Guna Vigyan vol-2, by P.V. Sharma,Chaukhamba Bharati Akadami, Varanasi, Ed-2005,P-253.

11 Draya Guna Vigyan vol-2, by P.V. Sharma,Chaukhamba Bharati Akadami, Varanasi, Ed-2005,P-537.

12 Draya Guna Vigyan vol-2, by P.V. Sharma, Chaukhamba Bharati Akadami, Varanasi, Ed-2005, P-120.

13 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana, Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana, p-81.

14 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-70.

15 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-78.

16 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-81.

17 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-76.

18 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-440.

19 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-437.

20 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana, Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana, p-460.

21 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-460.

22 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-51.

23 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-45.

24 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan,

Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-51.

25 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-53.

26 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthan a,p-54.

27 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-46.

28 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-52.

29 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-55.

30 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-408.

31 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-121.

32 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-121.

33 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-372.

34 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-328.

35 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-328.

36 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-416.

37 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-369.

38 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-42.

39 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan,

Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-66.

40 Charaka Samhita, Ayurveda Dipika commentary by Chakrapani , Sharma R K, Bhagawan Das,English commentary, Sutrasthan, Chaukhamba Sanskrita Series office, Varanasi, Edition 2009,Siddhi Sthana,p-286.

41 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana, Jadavji T, editor, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana: Sutrasthan-p 108, Chikitsa,p-396 & 397.

42 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana, Jadavji T, editor, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana: Sutrasthan,p-113.

43 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-113.

44 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-113.

45 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-118.

46 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-119.

47 Draya Guna Vigyan vol-2,by P.V.Sharma,Chaukhamba Bharati Akadami,Varanasi,Ed-2005,P-614.

48 Draya Guna Vigyan vol-2,by P.V.Sharma,Chaukhamba Bharati Akadami,Varanasi,Ed-2005,P-699.

49 Draya Guna Vigyan vol-2,by P.V.Sharma,Chaukhamba Bharati Akadami,Varanasi,Ed-2005,P-761.

50 Wikipidia,The free encyclopedia

51 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana, p-460.

52 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-119.

53Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-86.

54 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-88.

55 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-88-89.

56 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by

Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-83.

57 Dravyaguna Vigyana Vol.-2 by Prof. P. V. Sharma, Varanasi: Chaukhambha Bharati Academy, Edition-2005,P-25.

58 Dravyaguna Vigyana Vol.-2 by Prof. P. V. Sharma, Varanasi: Chaukhambha Bharati Academy, Edition-2005,P-51.

59 Ballal Pandit.Boja Prabandha, Luxmivenketeshwar Publication, Kalyan-Mumbai, Edition184,p-194.

60 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana: Sutrasthan,p-30.

61 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-35.

62 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-30.

63 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-41.

64 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-40. Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Sutrasthan, Varanasi: chaukhamba Sanskrita Sansthana,p-40.

65 Astanga Hridaya vol-1 by Prof. K.R. Srikantha Murthy, Varanasi: Chaukhamba Krishnadas Academy: Sutrasthan,p- 303.

66 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana: Sutrasthan,p-11.

67 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana: Sutrasthan,p-15.

68 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana: Sharirsthan,p-369.

69 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana: Sutrasthan,p-76.

70 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana: Sutrasthan,p-20.

71 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana: Sutrasthan,p-19.

72 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana: Chikitsasthan,p-468.

73 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana: Sutrasthan,p-20.

74 Primary Surgery vol-1, Non Trauma, Oxford medical publications, Oxford university press, Oxford, Delhi, Kualalumpur; edition 1990, p-344.

75 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Varanasi: chaukhamba Sanskrita Sansthana: Sutrasthan,p-20.

76 Primary Surgery vol-1, Non Trauma, Oxford medical publications, Oxford university press, Oxford, Delhi, Kualalumpur; edition 1990, p-59.

77 Primary Surgery vol-1, Non Trauma, Oxford medical publications, Oxford university press, Oxford,Delhi, Kualalumpur; edition 1990, p-386.

78 Primary Surgery vol-1, Non Trauma, Oxford medical publications, Oxford university press, Oxford,Delhi, Kualalumpur; edition 1990,p-263.

79 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana:Chikitsasthan,p-462.

80 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana: Chikitsasthan, p-430.

81 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana:Sutrasthan,p-83.

82 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana: Sutrasthan,p-89.

83 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana: Sutrasthan,p-89.

84 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana: Sutrasthan,p-52.

85 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana: Sutrasthan,p-21.

86 Sushruta Samhita, Nibandha Sangraha and Nyaya Chandrika commentary by Dalhana,Jadavji T, editor, Varanasi: Chaukhamba Sanskrita Sansthana: Sutrasthan,p-35.

PATHYA-APATHYA- IMPORTANCE IN AYURVEDA

- Monisha Raghuwanshi[1], Praveen Kumar Mishra[2]
e-mail : raghuwanshi.monisha@gmail.com

ABSTRACT :

Ayurveda is not merely a medical science. It is a complete life science. The first aim of Ayurveda is to maintain the health of a healthy person so that no diseases should manifest. Treatment of diseases is the second aim of Ayurveda. To maintain the health of a healthy person Acharyas had described various dos and don'ts such as Ritucharya (seasonal regime), Dinacharya (diurnal regime) etc. The concept of Pathya (wholesome)and Apathaya (unwholesome) is one such concept. Apart from being a part of regime of healthy living, Âcharyas had also extended the concept of Pathya (wholesome)and Apathaya (unwholesome) as a part of the treatment of the diseases. This indicates the importance of Pathya (wholesome)and Apathaya (unwholesome) in Ayurveda. The concept of Pathya (wholesome)and Apathaya (unwholesome) is the peculiarity of Ayurveda.

Keywords- *Ayurveda, Pathya, Apathaya, Healthy living.*

INTRODUCTION:

The aims and objectives of Ayurveda are to maintain the health of a healthy person and to cure the diseases of the patients1. As evident the first and foremost aim of Ayurveda is preventive in nature rather than curative. It signifies that "prevention is better than cure". To maintain the health, Ayurveda laid many basic principles like Ritucharya (seasonal regime), Dinacharya (diurnal regime) etc. The concept of Pathya (wholesome) and Apathya(unwholesome) is the peculiarity of Ayurveda to fulfill its aims and objectives.

The word Pathya derives its origin from root word Patha which literally means a way or channel. The substance or regime which do not adversely affect the body and mind are regarded as Pathya (wholesome); & substance those which adversely affect them are considered to be Apathya (unwholesome)[2]. As evident from above definition, Pathya (wholesome) and Apathya (unwholesome) include both material substances and specific regimes but in general these words had been particularly used for food articles in the texts of Ayurveda. Charak had stated that

[1]Assistant Professor, Department of Samhita Siddhanta, Veena Vadini Ayurved College & Hospital, Bhopal, M.P. [2]Associate Professor, Department of Samhita Siddhanta, Govt. Ayurved College & Hospital, Bilaspur, Chhattisgarh

wholesome food is one of the causes for the growth and wellbeing of humans while unwholesome food is the root of all diseases[3]. Charak had counted food first in the series of three supporting pillars of life along with sleep and controlled sexual activity[4]. Sushrut had further supported the fact by stating that food is the cause of vitality, strength, complexion and Oja[5]

SYNONYMS-

Pathya-Satmya, Swasthhitakara, Upshaya, Swavasthaparipaalaka, Hita Ahara, Swasthaaurjaskara, Sharmakara, Dhatuavirodhi, Sukhaparinaamkara, Dhatu Saamyakara[6].

Apathya- Asatmya, Swastha Ahitkara, Anupashaya, Ahitkara, Asukha Parinaamakara, Asharmakara, Dhatuasamyakara.

ANTIQUITY OF PATHYA &APATHYA-

History deals with the past. It is a guideline for development in any field of the life. The past experience about drugs/ food articles is of great help with regards to their quality, individuality, uniqueness etc. thus making it more fruitful for future generations. Veda- Vedasare the earliest known documentation, the sacred literature of India. Various evades about Pathya &Apathya are present in Veda right from Rigaveda e.g. Soma is the functional part of wholesome food which is a powerful medicine of all diseases. Wholesome food acts as a medicine and it should be strictly followed (Rigveda 8/ 73/17).

Yajurveda explained many cerealsand food ingredients like Masha (Phaseolus moongo Linn.), Tila (Sesamum indicum Linn.), Moodga (Phaseolus radiatus Linn.), Priyangu (Setaria italic Beauv.), Shyamaka (Echinochloa frumentacea), Neevara (Hygroryza aristata Nees.), Godhuma (Triticum sativum Lam.), Masoora (Lens culinaris Medic.) etc. Yajurveda states that water, food, air etc. when purified by Yajna Karma acts as medicine. (Yajurveda 18/ 12).

Atharveda states that a person who maintains Agni (fire), Jala (water), Vayu (air) and Prithavi (earth) by wholesome food and celibacy becomes energetic and healthy. He progresses towards the transcendent state attained as a result of being released from the cycle of rebirth (Atharveda Dwityakanda 28/5).

In Atharveda, some cereals like Virihi (Oryza sativa Linn.),Yava (Hordeum vulgare Linn.), Tila (Sesamum indicum Linn.), Masoora (Lens culinaris Medic.), Masha (Phaseolus moongo Linn.) etc. had been described (Atharveda Shastha kanda 2/140).

Ramayana- Payasa (rice pudding) in creases the power of reproduction and provides the wealth and health, thus is good and Pathya for human (Valmiki Ramayana 1/16/19).

Bhagwad Geeta- Food has been classified as Saatvika, Rajasa and Tamasa

in nature.Saatvika food increases life span, purifies the mind and soul and provides health, happiness and strength. This type of nourishing food is sweet, juicy, fatty and palatable. Rajasa foods are too bitter, too sour, salty, pungent, and dry and hot. Such foods cause pain, distress, and disease. Tamasa foods are food that are being cooked more than three hours before consumption, which is tasteless,decayed, decomposed and unclean (Bhagwad Geeta 17/7-10).

Hatha Yoga-

Hatha Yoga Samhita described Pathya Ahara for Yoga Shishya (disciple of Yoga). Ahara(food) for Yoga Shishya (student) should include Godhuma (Triticum sativum Lam.), Shali-Shashtika (Oryza sativa Linn.), Yava (Hordeum vulgare Linn.), Shobhananna (Shyamaka, Nivara, etc), Ksheera (milk), Aajya(clarified butter), Navneeta (freshly extracted butter), Sita (sugar), Madhu (honey), Shunthi (Zingiber officinale Rosc.), Patola (Trichosanthes dioica Roxb.), Panchashaka (Jeevanti (Leptadenia reticulate W. & A.), Vastuka (Chenopodium album Linn.), Matsyakshi (Enhydra fluctuans Lour.), Meghanada, Punarnava Boerhaavia diffusa Linn.), Mudga (Phaseolus radiatus Linn.), Aadhaki (Cajanus indicus Sperng.) and Divyodaka (Hathayoga Samhita 1/59-63).

IMPORTANCE OF PATHYA & APATHYA-

The importance of Pathya (wholesome) and Apathya (unwholesome) in Ayurveda can be deduced from the fact that Charak had stated Pathya (wholesome) as a synonym for treatment[7]. Charak stated that when channels of circulation become hard by aggravated and vitiated Dosha, Pathya (wholesome) helps to soften the Srotasa (channels of circulation) and Dosha alleviation[8]. Charak had elaborately described the concept of Pathya (wholesome) and Apathya (unwholesome). He had given a general list of Pathya (wholesome) and Apathya Dravya (unwholesome) along with specific Pathya (wholesome)and Apathya Dravya (unwholesome) for patients and Sansarjana Krama (specific food regime) for patients who have undergone Panchkarma Therapy.Further, Sushrut had specifically written a chapter named Hita-Ahitiya Aadhyay in Sutra Sthan.

Kashyap explored the medicinal potential of Aahar (food) along with its prophylactic value of maintaining health. Kashyap stated that food is the best medicine. No drug can match the benefits of food in diseased state. Only wholesome food can keep a person healthy[9].

Harita stated the importance of Pathya (wholesome) and Apathya (unwholesome) by stating that if a

personignores the concept of Pathya-Apathya and devour Apathya (unwhole some), illness will never leave the body. Hence person should use Pathya (whole some) according to his/her physical and pathological condition regularly. Even in the absence of medicine, if patient takes only Pathya (whole some) according to disease he will become healthy, but even if patient takes more and regular medicine and avoid Pathya Ahara prescribed by physician ,he will never become healthy.

In Yogaratnakara, it is said that for the treatment of diseases etiology, drug treatment and Pathya (wholesome) are three important factors which should be studied thoroughly before starting the treatment. Judicious planning of treatment by proper understanding of these three factors always yields a successful eradication of disease. Yogaratnakara uses the metaphor of Ankura (seedling) for progressive form of disease. This Ankura (seedling) will dry and be destroyed if it is not nourished by water; similarly disease will be destroyed if a patient does not consume Apathya Ahara(unwholesome food).

Vaidya Lolimbraja indicated the importance of Pathya Aahar(wholesome food)by stating that if a patient intakes wholesome food then there is no need of medicine and if a patient continuously consumes unwholesome food then also there is no need of medicine. In the latter case, medicine will not be effective[12].

Charak had also given equal importance to Pathya Vihar (wholesome routine) along with Pathya Aahar (wholesome food) for maintenance of health. As Charak has stated that in conditions of Chinta (anxiety), Shoka (sorrow), Krodha(anger), DukhaShaiya (uncomfortablebed) and Ratrijagarana (insomnia), even the small amount of Pathya Ahara (wholesome food) is not digested, thus have given equal importance to both Pathya Ahara andVihara[13].

Bhela Samhita also explains about merits of Pathya and demerits of Apathya in the Sutrasthana. Pathya Ahara nourishes all Dhatus (body elements) and Srotasa (channels of circulation) leading to complete nutrition of body. Pathya Ahara also helps to detoxify the body by getting rid of vitiated Dosha. Contrary to this, Apathya Ahara helps in vitiation of Vata etc. Doshas. Hence for maintenance of health and treating diseases Pathya Ahara should be consumed.

GENERAL PATHYA AND APATHYA-

Acharya Charak indicated some food articles which should always be consumed by healthy persons. These food articles include Shashtika (variety of rice), Shali (variety of rice), Mudga (Phaseolus radiatus Linn.), Saindhav, Amalaka (Emblica officinalis Gaertn.), rain water,

Ghee (clarified butter), meat of animals dwelling in arid climate and honey. Similarly, Acharya Charak had also indicated some food articles which should be avoided by healthy persons. Such food articles are Vallura (dried meat), dried vegetables, lotus rhizome and stalk and one should never consume meat of diseased animals.

GENERAL PARAMETERS TO DECIDE PATHYA-APATHYA-

Corns and grains, one year after their harvesting are wholesome. Old corns and grains are mostly not unctuous while fresh ones are heavy to digest. Corns and grains which take a shorter time for cultivation as well as for harvesting are easy to digest than those taking longer time. De-husked pulses are easy to digest.

Meat of animals who have died a natural death, who are emaciated or dried up after death, who are fatty in excess, who are old, who are too young, who are killed by poisonous arrows, who gaze in a land not commensurate with their natural habitat and who are bitten by snakes and tigers etc. are unwholesome. Otherwise, meat is wholesome, nourishing and strength promoting[18].

Vegetables infested with insects, exposed to the wind and the sun for long time, dried up, old and unseasonal are wholesome. When they are cooked without fat and residual water after boiling is not filtered out, vegetables become unwholesome for use.

Fruits which are old, unripe, afflicted by insects and serpents, exposed to snow or sun for long, growing in the land and season other than the normal habitat and time and putrified are unwholesome.

DIFFERENT PATHYA KALPANA-

Various Pathya Kalpana like Peya, Vilepi, Yavagu had been described by Acharyas. These Kalpanas (preparations) are generally used in different diseases according to state of disease and capacity to digest the food in that disease. These Kalpana (preparations) helps in stimulating digestive fire.Thus, it will also avoid formation of Ama which is often triggered when Agni (digestive fire) is hampered.

Pathya Kalpana and Their Uses:

Some Pathya Kalpana, Method for preparation & their Uses are as follows.

Manda -The filtered liquid portion obtained after boiling one Carminative, Digestive part of rice and fourteen parts of water :- Carminative, digestive.

Peya- One part of rice and fourteen parts of water, boiled into Quickly digestible, Stops loose watery consistency:- Quickly digestible, stops loose motions, Nourishes the tissues.

Vilepi -One part of rice and four parts of water, cooked into Strengthening, Nourishing, Good for thick paste :- Strengthening, nourishing, good for heart, Delicious, Diuretic.

Yavagu -One part of grain rice etc. and six parts of water, Strengthening, Nourishing cooked into thick paste :- Strengthening, nourishing.

PRACTICAL APPLICATION OF CONCEPT OF PATHYA-APATHYA-

Pathya-Apathya in a particular season:

Acharya had described specific Pathya-Apathya for every season. The practice of Pathya-Apathya as per season will improve overall health for e.g. in winter season meat of aquatic and marshy animals and burrow dwelling anials should be consumed. Other wholesome food articles for winter season include preparations of cow milk, cane juice, fat, oil, new rice etc. On the other hand dieting and intake of gruel should be avoided. In Vihara, fomentation and warm clothes are wholesome to practice.

Concept of Kritanna Varga:

All these benefits of Pathya Aahara can be ripped off with the help of Kritanna Varga described in various ancient texts. Properties of these Kritanna differ from each other depending upon the method of preparation even if material used is the same. In case of Manda, Peya, Yavagu and Vilepi, the amount of water used for cooking and then amount of liquid and solid content is different for each of them. These Kalpana become easy to digest according to their state and attain various physiological actions as well. Thus, these can be prescribed for patient as a meal.

Pathya-irrespective of disease condition:

These Pathya Ahara are described specific to a particular disease condition. According to Bhavaprakasha taking ginger and salt before food is always good and it enhances Agni(digestive fire)[23]. Taste, clears tongue and throat. Charaka and Vagbhata also describe some regularly consumable food articles. Rakta shali, Mudga, Rain water, Saindhava (rock salt), Jivanti, meat of Aina, Godha, Rohita Matsya, cow's ghee, cow's milk, Tila Taila, ginger, grapes, pomegranate and sugar are considered as most conducive among food articles.

Pathya-for specific disease condition:

Disease specific Pathya (wholesome diet/ foods to be consumed) and Apathya (unwholesome diet/ foods to be avoided) are explained in various classical texts like Charaka Samhita, Sushruta Samhita, Ashtangahridaya etc. but there are detailed descriptions about them in other texts like Sharangdhara Samhita, Pathyapathya Vibodhika, Bhaishajyaratnavali etc.e.g.

Madhumeha (Diabetes mellitus):

Item -Pathya -Apathya

1. Cereals- Barley, special variety of grain (sanvaka, kodrava), wheat-Freshly harvested grains, rice.
2. Pulses -Green gram (Mudga), Kulattha, Pigeon pea (Arahara), Alasi, Chickpea (cana)-Black gram(Udada).

3.Fruits and vegetables-Patola, bitter gourd (karavellaka), amalaki, haridra, kapittha, black pepper-Sweet fruits, Potato etc.

4.Other- Honey, betel nut, rock salt- Milk, curd, butter milk, clarified butter, oil, jaggery, alcohol, sugarcane products, betel, eating before digestion of previous food, incompatible food.

5. Cereals -Wheat, rice -Special variety of rice (kodrava, sanvaka)

6. Pulses- Black gram (udada), kulattha - Peas (matar), chickpea (cana), pigeon pea (arahara), green gram (mudga)

7. Fruits & vegetables-Patola, shigru, brinjal, garlic, pomegranate, mango, phalasa, lemon, jujube plum (badara, bera), grapes-Bitter gourd (karavellaka), lotus stem.

8. Other Clarified butter, oil, sesame, milk, coconut water, sour vinegar (kanji), tamarind (imali)-Jambu, betel nut.

DISCUSSION-

Ayurveda has a holistic approach in health management. It gives due importance to food in the management of disease both as a causative factor (Apathya) and as a part of therapy (Pathya). As per Ayurveda, most of the ailments develop due to faulty eating habits so Ayurveda deals with the Pathya Vyavastha (planning of diet and dietetics) in a very scientific way. Day to day activities, seasonal regimes etc. also plays an important role in the maintenance of health and thus, had also been included in the concept of Pathya-Apathya by the Acharyas. The above described facts are about the general concept of Pathya-Apathya in Ayurveda. The specific Pathya-Apathya for a particular person may differ as Ayurveda believes in the concept of uniqueness of each and every individual[24]. The exact Pathya-Apathya for a particular person should be decided after analyzing Prakriti (body nature), Kalpana (preparation to be given), Kaal (time of intake of food), Matra (quantity) etc.

CONCLUSION-

Pathya is the one which keeps the person healthy, maintains normal body functions leads to proper functioning of the organs, nourishes the mind and intellect, prevents diseases and at the same time corrects the irregularities that may occur in the body. Thus, everyone should refrain from Apathya (unwholesome to body) and follow Pathya (wholesome to body) as prevention is better then cure.

REFERENCES:-

1. Agnivesh, Arthedashamahaamuliya Adhyaay, Sutra Sthan, Charak Samhita with Chakrapani Teeka,ed. Yadavji Trikam Ji, Ist edition, Chaukhambha Surbharti Prakashan, Varanasi, 2014, page- 187.

2. Agnivesh, Yajjapurushiya Adhyaay, Sutra Sthan, Charak Samhita with Chakrapani Teeka, ed. Yadavji Trikam Ji, Ist edition, Chaukhambha Surbharti Prakashan, Varanasi, 2014, page- 133.

3. Agnivesh, Yajjapurushiya Adhyaay, Sutra Sthan, Charak Samhita with Chakrapani Teeka, ed. Yadavji Trikam Ji, Ist edition, Chaukhambha Surbharti Prakashan, Varanasi, 2014, page- 129.

4. Agnivesh, Trieshniya Adhyaay, Sutra Sthan, Charak Samhita with Chakrapani Teeka, ed. Yadavji Trikam Ji, Ist edition, Chaukhambha Surbharti Prakashan, Varanasi, 2014, page- 74.

5. Sushrut, Annapaan Vidhi Adhyay, Sushrut Samhita with Nibandh Sangrah & Nyay Chandrika Commentary, translator Keval Krishna Thakral, Ist edition, Vol. I, Chaukhambha Orientalia, Varanasi, 2014, page- 544.

6. Commentary by Chakrapani, Yajjapurushiya Adhyay, Sutra Sthan, Charak Samhita with Chakrapani Teeka, ed. Yadavji Trikam Ji, Ist edition, Chaukhambha Surbharti Prakashan, Varanasi, 2014, page-133.

7. Agnivesh, Rasaayan Adhyaay, Abhaya Aamalaki Rasaayan Paad, Chikitsa Sthan, Charak Samhita with Chakrapani Teeka, ed. Yadavji Trikam Ji, Ist edition, Chaukhambha Surbharti Prakashan, Varanasi, 2014, page- 376.

8. Agnivesh, Yonivyaapad Chikitsa, Chikitsa Sthan, Charak Samhita with Chakrapani Teeka, ed. Yadavji Trikam Ji, Ist edition, Chaukhambha Surbharti Prakashan, Varanasi, 2014, page- 649.

9. Kashyap,Amlapitta Chikitsaadhyay, editor Prof. P.V.Tiwari, Kashyap Samhita, 1st edition, Varansi, Chaukhamba Vishvabharti, 1996, page- 468.

10. Harit, Aushadha Parigyan Vidhan, Tritya Sthan, editor Harihara Prashad Tipathi, Chaukhambha Krishnadas Academy, Varanasi, 2005, page- 173.

11. Anonymous, Jwarchikitsa, Yogaratnakara, editor P.V. Tiwari, Ist edition, Chaukhambha Vishvabharti, Varanasi, 2010, page- 286.

12. Lolimbaraja, Prathamo Vilasa, Vaidya Jeevana, editor Priyavrat Sharma, Chaukhambha Surbharti Prakashan, Varanasi, 2013, page- 6.

13. Agnivesh, Trividh Kukshiyam, Vimaan Sthan, Charak Samhita with Chakrapani Teeka, ed. Yadavji Trikam Ji, Ist edition, Chaukhambha Surbharti Prakashan, Varanasi, 2014, page- 238.

14. Bhel, Atyashitiya Adhyay, Bhel Samhita, editor Abhay Katyayan, Chaukhambha Surbharti Prakashan, Varanasi, 2009, page- 15.

15. Agnivesh, Matrashitiya Adhyaay, Sutra Sthan, Charak Samhita with Chakrapani

Teeka, ed. Yadavji Trikam Ji, Ist edition, Chaukhambha Surbharti Prakashan, Varanasi, 2014, page- 38.

16. Agnivesh, Matrashitiya Adhyaay, Sutra Sthan, Charak Samhita with Chakrapani Teeka, ed. Yadavji Trikam Ji, Ist edition, Chaukhambha Surbharti Prakashan, Varanasi, 2014, page- 38.
17. Agnivesh, Annapaanvidhi Adhyaay, Sutra Sthan, Charak Samhita with Chakrapani Teeka, ed. Yadavji Trikam Ji, Ist edition, Chaukhambha Surbharti Prakashan, Varanasi, 2014, page- 171.
18. Agnivesh, Annapaanvidhi Adhyaay, Sutra Sthan, Charak Samhita with Chakrapani Teeka, ed. Yadavji Trikam Ji, Ist edition, Chaukhambha Surbharti Prakashan, Varanasi, 2014, page- 171.
19. Agnivesh, Annapaanvidhi Adhyaay, Sutra Sthan, Charak Samhita with Chakrapani Teeka, ed. Yadavji Trikam Ji, Ist edition, Chaukhambha Surbharti Prakashan, Varanasi, 2014, page- 171.
20. Agnivesh, Annapaanvidhi Adhyaay, Sutra Sthan, Charak Samhita with Chakrapani Teeka, ed. Yadavji Trikam Ji, Ist edition, Chaukhambha Surbharti Prakashan, Varanasi, 2014, page- 171.
21. Sharangdhar, Kwath Kalpana Adhyay, Madhyam Khand, Sharangdhar Samhita with Dipika and Gudaartha Dipika Commentary, editor Vidyasagar Pandit Parshuram Shashtri, Chaukhambha Surbharti Prakashan, Varanasi, 2013, page- 164-170.
22. Agnivesh, Tasyashitiya Adhyaay, Sutra Sthan, Charak Samhita with Chakrapani Teeka, ed. Yadavji Trikam Ji, Ist edition, Chaukhambha Surbharti Prakashan, Varanasi, 2014, page- 45-46.
23. Bhavprakash, Haritakyadi Varga, Bhavprakash Nighantu, commentary by K.C. Chunekar, Varansi, Chaukhambha Bharti Academy, 2013, page- 14.
24. Agnivesh, Dirghanjeevitiya Adhyaay, Sutra Sthan, Charak Samhita with Chakrapani Teeka, ed. Yadavji Trikam Ji, Ist edition, Chaukhambha Surbharti Prakashan, Varanasi, 2014, page-22.

श्रद्धांजलि

विश्व आयुर्वेद परिषद, आन्ध्र प्रदेश के उपाध्यक्ष और हमारे संगठन के एक कर्मठ कार्यकर्ता डा श्री राम चंद्र मूर्ति जी के देवलोक गमन के समाचार से हम सब स्तब्ध हैं। आन्ध्र प्रदेश में परिषद के कार्य विस्तार में डा मूर्ति की अहम् भूमिका रही है। उनका अचानक जाना परिषद परिवार की क्षति है। परिषद परिवार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान कर अपने श्री चरणों में स्थान दे तथा शोक संतप्त परिजनों को यह आघात सहन करने की शक्ति प्रदान करे। दिवंगत आत्मा के प्रति विश्व आयुर्वेद परिषद परिवार की ओर से विनम्र भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

प्राचीन वाङ्मय में स्रोतस की अवधारणा

– टीना सिंघल[1], आशुतोष कुमार यादव[2]
e-mail : drtinasinghal@gmail-com

शरीर स्थित रचनाओं में मूल भाग आकाशीय है। इन आकाशीय रचनाओं द्वारा किसी न किसी वस्तु (धातु या मल) का स्रवण होता रहता है। इन्ही दोषधातुमलादिको का शरीर में अभिवहन तथा स्रवण होने के कारण इन आधारभूत रचनाओं को स्रोतस कहते है।

स्रोतस शरीर के मार्गों की साधारण संज्ञा है। स्रोतस शब्द का प्रयोग अलग अलग ग्रंथों में किया गया है। पुरुषों में जितने भी मूर्तिमान भाव विशेष हैं, उतने ही इस शरीर में विशेष स्रोतसों के प्रकार हैं पुरुष में सभी प्रकार के भाव बिना स्रोतस् के उत्पन्न नहीं होते अर्थात् पुरुष शरीर में उत्पन्न होने वाला कोई भी भाव बिना स्रोतस् के नहीं होता न ही क्षय को प्राप्त होता है। परिणाम को प्राप्त होने वाली धातुओं के अभिवहन का कार्य स्रोतस् ही करते हैं। अतः स्रोतस् का प्रयोग 'अयनश्च अर्थ में हुआ है।

सर्वे हि भावाः पुरुषे नान्तरेण स्रोतांस्यभिनिर्वर्तन्ते, क्षयं वाऽप्यभिगच्छन्ति।

स्रोतांसि खलु परिणाममापद्यमानानां धातुनाम– भिवाहीनि भवन्त्ययनार्थेन।। च.वि. 5/3

जो स्रवण करते हैं, उन्हें स्रोतस् कहा है।

ध्मानाद्धमन्यः स्रवणात् स्रोतांसि।

–च.सू. 30/12

स्रोतस का इतिहास

वेदों और पुराणों में कई स्थानों पर स्रोतस शब्द का वर्णन किया गया है। स्रोतस शब्द के अतिरिक्त इसके पर्यायों को भी विभिन्न सन्दर्भों में बताया गया है। वेद ज्ञान का भण्डार हैं जिसमे से 4 मुख्य हैं– ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। वेदों में स्रोतस के पर्याय के रूप में पन्था, धमनी, नाडी आदि शब्दों का वर्णन है।

ऋग्वेद में स्रोतस–

ऋग्वेद में उपरोक्त सन्दर्भ मिलते हैं

- गिरीणाम् स्रु भिरेशाम् ।

–ऋग्वेद 8/46–18

- उग्रोयथि नित्यः स्रोतः ससृजतः ।

–ऋग्वेद 1/51–11

उग्रोययिनिरपःस्रोतसासृजाद्विशुष्णस्यदृहिताएरयत्पुरः।

यजुर्वेद में स्रोतस–

यजुर्वेद में स्रोतस शब्द नही मिलता है अपितु यत्र तत्र सिरा, पन्था, कुल्या आदि शब्द मिलते है। हिराभि स्रवन्ति में स्रवन्ति से स्रोतस अर्थ को ग्रहण करते हैं। प्राणवह पन्था शब्द के रूप में प्राणवह स्रोतस का वर्णन किया गया है। यजुर्वेद में स्रोतस के पर्याय के रूप में निम्नलिखित शब्द मिलते है– स्रुत्याय, सरस्याय, कुल्या, पन्था, वैशन्ताय।

- इन्द्रस्य कोडोऽदित्यै.....हिराभिः स्रवन्तीर्ह्रदान्कुक्षिम्यां समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना। यजु. 25/8
- आदित्याँश्मश्रुभिः पन्थानं भ्रूमयां धावा पृथिवी.. .... पक्ष्माणि पार्या इक्षवः। शु. यजु 25/1

[1]प्रवक्ता, [2]रीडर, रचना शारीर विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर आयुर्वेद महाविद्यालय, वाराणसी

♦ अविर्न मेषो नसि वीर्याय प्राणस्य पन्था अमृतो गहाभ्याम सरस्वत्युपवाकैर्त्यानं नस्यानि बहिर्बदरैर्जजान। शु. यजु. 19/90

♦ नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याप च नीप्याय च। नमः कुल्यात च सरस्याय च नमौ नादेयाय च वैशन्ताय च। शु. यजु. 16/37

अथर्ववेद में स्रोतस–

अथर्ववेद हिन्दुओं का पवित्र ग्रन्थ है और यह चतुर्थ वेद भी कहलाता है। ऐसा सन्दर्भ मिलता है कि अथर्ववेद को दो ऋषि समुदाय अथर्वाण एवं अंगिरस ने मिलकर बनाया था, इसीलिए पहले इसे अथर्व अंगिरस के नाम से जाना जाता था। स्रोतस के लिए निम्नलिखित शब्दों का वर्णन आया है–

1. अन्त्रेषु –

♦ यदान्त्रेषु गवीन्योर्य द्वस्तावधि संश्रुतम्। एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहि र्बालिति सर्वकम्।। अथर्ववेद 1/1/4/6

2. अस्राव –

♦ यथा धां च पृथिवी चान्तस्तिष्ठति तेजनम्। एवा रोगं चास्रावं चान्तस्तिष्ठतु मुज्जइत्।। अथर्ववेद 1/24

3. धमनी –

♦ शतस्य धमनीनां सहस्रस्य हिरणाम्। अस्थुरिन्मध्यमा इमाः साकमन्ता अरंसत।। अथर्ववेद 1/4/1/3

4. गवीनी –

♦ यदान्त्रेषु गवीन्योर्य द्वस्तावधि संश्रुतम्। एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहि र्बालिति सर्वकम्।। अथर्ववेद 1/1/4/6

मूत्रवहा स्रोतस में मूत्र नलिका का वर्णन आया है । इसी को कहीं कहीं पर गवीनी भी कहा गया है ।

5. हिरा –

♦ इन्द्रस्य कोडोऽदित्यै.....हिराभिः स्रवन्तीर्ह्रदान्कुक्षिम्यां समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना। यजु. 25/8

6. पन्था, पंथान –

♦ धृतेन गात्रानु सर्वा वि मृड्डि कृण्वे पन्थां पितृषु यः स्वर्गः। अथर्ववेद 11/1/4/31

♦ समचिनुष्वानुसंप्रयाह्वाग्ने पथः कल्पयः देवयानात्।

एतैः सुकृतैरनु गच्छेम यज्ञं नाके तिष्ठन्तमधि सप्तश्र्मो।। अथर्ववेद 11/1/4/36

7. सप्त खानि, नव द्वार –

♦ कः सप्त खानि ति ततर्द शीर्षणि कर्णा विमौ नासिके चक्षणी मुखम्।

–अथर्ववेद 10/1/2/6

♦ अष्टाचक्रा नवद्वारां देवानां पूरयोध्या। तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृत। अथर्ववेद 10/1/2/31

8. स्रोत्याय –

♦ नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याप च नीप्याय च। नमः कुल्यात च सरस्याय च नमौ नादेयाय च वैशन्ताय च।शु. यजु. 16/37

श्रीमदभागवद्गीता में स्रोतस–

भगवद्गीता अर्थात ईश्वर का संगीत। सामान्यतः इसे गीता भी कहते है और यह महाभारत का एक अंश है। इसमें नव द्वार के बारे में बताते हुए स्रोतस के स्थान पर द्वार शब्द से स्रोतस बताया है।

♦ सर्वकर्माणि मनसा सन्यस्याऽऽस्ते सुखं वशी। नव द्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन्।।

–श्रीमदभगवत गीता 5/13

उपनिषद में स्रोतस

उपनिषद शब्द उप (समीप) और नि (ध्यानपूर्वक उचित स्थान), षद (पास में बैठना)से बना है। उपसर्ग पूर्वक सद धातु से निष्पन्न होता है। उपनिषद हिन्दू धर्म ग्रन्थ है जो वेदांत की मूलभूत शिक्षाओ को दर्शाते है। उपनिषदों ने हिन्दू दर्शन पर विशेष प्रभाव डाला है। उपनिषद का अर्थ है– शिष्य का गुरु के समीप ध्यानपूर्वक परम तत्त्व का गूढ़ उपदेश सुनने के लिए बैठना।

श्वेतरोपनिषद के द्वितीय अध्याय में मनोवाही स्रोतस का वर्णन करते समय स्रोतस शब्द आया है।

- तिलेषु तैलं दधनीव सर्पि रापः स्रोतः, स्वरणीषु चाग्नि । श्वेता. उपनिषत् 1/15
- बह्योडुपेन प्रतरेत् विद्वान स्रोतांसि सर्वाणि भयावहानि । श्वेताश्तरोउपनिषत् 2/8

  आत्मोपनिषद में भी स्रोतस शब्द से वहन को बताया है ।
- 27.इतस्तत चाल्पमानो यन्किचिंत्प्राणवायुना। स्रोतसा नीयते दारू यथा निम्नोन्नतस्थलम्।। आत्मोपनिषत् 1/18

गोभिल गृह्य सूत्र में सप्त बाह्य स्रोतस जिसे सप्तखानि स्रोतस भी कहते है।

श्वेताश्वारोपनिषद के तृतीय अध्याय में मनोवाही स्रोतस का वर्णन करते समय स्रोतस शब्द का उल्लेख आया है। तथा गोभिल गृह्य सूत्र में सप्त बाह्य स्रोतस नाम से वर्णनं आया है।

पुराणों में स्रोतस–

पुराण हिन्दुओं के धर्म सम्बन्धी आख्यान ग्रन्थ हैं जिनमे संसार के ऋषियों, राजाओं के वृतांत आदि है। पुरा शब्द का अर्थ है – अतीत। अण शब्द का अर्थ होता है कहना या बतलाना। पुराणों की संख्या प्राचीन काल से 18 मानी गयी है। इनमे से एक पद्म पुराण के शरीरोत्पत्ति अध्याय में स्रोतस का उल्लेख आया है।

पुराण साहित्यिक और आध्यात्मिक ज्ञान का विशाल ग्रन्थ है जो भूत, भविष्य और वर्तमान पर प्रकाश डालते हैं। ऐसा माना जाता है कि पुराण इस संपूर्ण संसार में पौराणिक गाथाओं का समृद्ध ग्रन्थ है। इनमे से प्रत्येक पुराण भजन, कहानियों, ज्ञान, निर्देशों (जो पवित्र अनुष्ठानों से सम्बंधित है) से भरा हुआ है। ये ग्रन्थ ही हिन्दू पुराण कथा के शास्त्र का भण्डार हैं। इनमें ब्रह्माण्ड ज्ञान तथा यह ब्रह्माण्ड हमारे जीवन को कैसे प्रभावित करता है –सब बताया गया है। मुख्य रूप से 8 पुराण हैं जिसमे से पद्म पुराण में शरीरोत्पत्ति अध्याय में स्रोतस का वर्णन आया है जिसका अर्थ वहन से लिया गया है। (पदम् पुराण शरीरोत्पत्ति अध्याय–73)

यूनानी पद्धति में स्रोतस

यूनानी पद्धति और आयुर्वेद में काफी साम्यता है । यूनानी लोगो का मत है कि सम्पूर्ण शरीर स्रोतस से निर्मित है जिसे पेतु कहते है तथा स्रोतस में अवरोध होने से रोग उत्पन्न होते है ।

स्रोतस शब्द की उत्पत्ति –

1. शब्दकल्पद्रुम के अनुसार – संस्कृत मूल स्रुगतौ शब्द से स्रोतस की निरुक्ति बताई गयी है। स्रोतस् – स्रु गतौ धातु + असुन् प्रत्यय + तुट् प्रत्यय
2. अमरकोष के अनुसार – जिन मार्गो में प्रा.त रूप से सरण होता हो –स्रोतोऽम्बु सरणम् स्वतः। अमरकोश 1/10/10

3. वाचस्पत्यम एवं वैद्यक शब्द सिन्धु के अनुसार– शरीर के छिद्र एवं द्वार को स्रोतस कहते हैं।

4. आचार्य चरक ने चरक संहिता के सूत्र स्थान के अर्थेदशमहामूलीय अध्याय में स्रोतस का वर्णन किया है–स्रवणात् स्रोतांसि।

अर्थात् जो स्रवण करते हैं (द्रव द्रव्य–उनमें से निकलता है) उन्हें भी स्रोतस् कहा है । इस व्याख्या के अनुसार शरीर में जो अंतस्त्वचारूप पतली कलाएँ हैं तथा जो कला प्रत्यंगो को अंततः आवरण किये रहती हैं उन्हें ही स्रोतस कहा जाना चाहिये। चरक विमान स्थान में स्रोतस के बारे में कहा गया है कि जिस पुरुष में मूर्तिमान भाव है उतने ही इस पुरुष के स्रोतस भेद एवं प्रकार है । इसलिए आयुर्वेदीय शारीर वेत्ताओं का विचार है कि शरीर में स्रोतस असंख्य है तथा पुरुष स्रोतों का समुदाय है ।

अपि चैके स्रोतसामेव समुदायं पुरुषमिच्छन्ति।

–च.वि. 5/4

कोई आचार्य तो स्रोतसों के समुदाय को ही पुरुष कहते है।

5. चक्रपाणिदत्त के अनुसार

स्रवणादिति रसादेरेव पोष्यस्य स्रवणात्। सरणाद् देशान्तरगमनाद् । च.सू. 30/12 पर चक्रपाणि

जिनके द्वारा पोष्य रसादि का स्रवण हो । जिन शरीरस्थ कोशिकाओं का पोषण स्रवण विधि द्वारा हो, उस मार्ग को स्रोतस कहते है।

6. कविराज गंगाधर के अनुसार जिन मार्गों के द्वारा सम्पूर्ण शरीर में रस एवं धातु का वहन होता हो

स्रवणाद् रसादिस्राव पथत्वात् स्रोतांस्युच्यते। गंगाधर

स्रोतस के पर्याय–

स्रोतांसि, सिराः, धमन्यः, रसायन्यः, रसवाहिन्यः, नाड्यः, पन्थानः, मार्गाः, शरीरच्छिद्राणि संवृतासंवृतानि, स्थानानि, आशयाः, निकाह शरीरधात्ववकाशानां लक्ष्यालक्ष्याणां नामानि भवन्ति। तेषां प्रकोपात् स्थानस्थाश्चौव मार्गगाश्च शरीरधातवः प्रकोपमाप ।न्ते, इतरेषां प्रकोपदिलराति च । स्रोतांसि स्रोतांस्येव, ध ातवश्च धातूनेव प्रदूषयन्ति प्रदुष्टाः । तेषां सर्वेषामेव वातपित्तश्लेष्माणः प्रदुष्टा दूषयितारो भवन्ति, दोषस्वभावादिति। च.वि.5/9

स्रोतस, सिरा, धमनी, रसायनी, रसवाही नाड़ियां, नाड़ी, पन्थान, मार्ग, शरीर के छिद्र, बन्द एवं खुले हुई छिद्र, स्थान, आशय तथा निकेत ये सब शरीर के अन्दर दिखाई देने या न देने वाले खाली स्थानों के नाम होते हैं। उनके प्रकोप से स्थानगत एवं मार्गगत धातुएं प्रकुपित हो जाती हैं तथा अन्य स्रोतवाही दोषों के प्रकोप से अन्य धातुएं दूषित होती हैं। स्रोतस् के द्वारा स्रोतस् की तथा धातुओं के द्वारा धातुओं की पुष्टि होती है। उन सभी (स्रोतस् एवं धातुओं) में वातपित्त व कफ स्वभाव से ही दूषित होकर दूसरी धातुओं एवं स्रोतसों को दूषित करते हैं।

आचार्य वाग्भट ने काय, जीवित आयतन, द्वाराणि भी स्रोतस के पर्याय बताये हैं।

स्रोतस की परिभाषा

चरक के अनुसार परिणाम को प्राप्त होने वाली धातुओं के अभिवहन का कार्य स्रोतस् ही करते हैं। अतः स्रोतस् का प्रयोग 'अयनश्च अर्थ में हुआ है।

सर्वे हि भावाः पुरुषे नान्तरेण स्रोतांस्यभिनिर्वर्तन्ते, क्षयं वाऽप्यभिगच्छन्ति।

स्रोतांसि खलु परिणाममाप।

मानानां धातुनामभिवाहीनि भवन्त्ययनार्थेन।। च.वि. 5/3

सुश्रुत के अनुसार शरीर में मूल छिद्र से प्रसृत तथा रस का वहन करने वाले अंतर अर्थात छिद्र अर्थात अवकाश को स्रोतस जानना चाहिए ।

मूलात् खादन्तरं देहे प्रसृतं त्वभिवाहि यत् । स्रोतस्तदिति विज्ञेयं सिराधमनिवर्जितम् ।। सु.शा. 9/13

स्रोतों की अपरिसंख्येयता–

सर्वशरीरगत अवयवों में व्याप्त होने के कारण, सर्व शरीर में गति करने के कारण तथा दोषों के प्रकोप प्रशमन के कारण कुछ लोग स्रोतस् के समुदाय को ही पुरुष स्वीकार करते हैं। जबकि ऐसा नहीं है– जिसके स्रोतस् हैं, जिनका वहन इनके द्वारा होता है, जिन द्रव्यों का इनसे निस्सरण होता है तथा जिस स्थान पर ये स्थित होते हैं, वे सब इनसे (स्रोतसों) पृथक् है। अत्यधिक होने के कारण कुछ इन्हें अपरिसंख्येय बतलाते है तथा कुछ लोग संख्येय बतलाते हैं। सर्वत्र व्याप्त होने के कारण , दोषों के प्रकोपक और शामक आहारों के सर्व शरीर में गमन करने के कारण स्रोतों के समुदाय को ही पुरुष मानते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची :

- चरक संहिता, श्री चक्रपाणि दत्त आयुर्वेद दीपिका हिंदी व्याख्या ए निर्णय सागर प्रेस, बाम्बे, पॉचवा संस्करण 2001
- चरक संहिता, श्री चक्रपाणीदत्त विरचिता आयुर्वेद दीपिका आयुषी विस्तृत हिंदी व्याख्या विभूषिता, वैद्य हरिशचन्द्र कुशवाहा, चौखम्भा ओरियन्तालिया, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण, 2016, पेज 629–635
- सुश्रुत संहिता, श्री डलहणचार्य एवं श्री विरचित विस्तृत हिंदी व्याख्या, डॉ, के के ठकराल, चौखम्भा ओरियन्तालिया, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 2014, पुनर्मुद्रित संस्करण, पेज 136–139
- ऋग्वेद संहिता, पंडित राम गोविन्द त्रिवेदी, प्रथम अष्टक, चौखम्भा विद्या भवन वाराणसी, पेज संख्या 431
- चरक संहिता, श्री जेज्जट विरचिता निरन्तर पद व्याख्या, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण, 1940
- गणनाथ सेन, प्रत्यक्ष शारीरं, चारूचंद प्रकाशन, तृतीय संस्करण
- कराम्वेलकर, अथर्ववेद और आयुर्वेद, चौखम्भा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, 2003, पेज 100.
- लालचंद्र वैद्य, अष्टांग हृदय सर्वांग सुंदरी व्याख्या, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, 1990.
- मोनिएर विलियम, संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली, 1999
- मूर्ति के.आर., भाव प्रकाश इंग्लिश व्याख्या, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी प्रथम संस्करण, 1998,
- मूर्ति के. आर., श्रीकांत, शारंगधर संहिता इंग्लिश व्याख्या, चौखम्भा ओरिएन्तालिया, वाराणसी, चतुर्थ संस्करण, 2001.
- श्री राम शर्मा, उपनिषद, (108) द्वितीय संस्करण, 1993, संस्कृत संस्थान, बरेली.
- सुश्रुत संहिता, आयुर्वेद तत्व संदीपिका हिंदी व्याख्या, कविराज अम्बिकादत्त शास्त्री, चौखम्भा संस्कृत भवन, वाराणसी, ग्यारहवा संस्करण, 1997
- प्रेमवती तिवारी, आयुर्वेदीय प्रसूति तंत्र एवं स्त्री रोग, चौखम्भा ओरिएन्तालिया, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, 1996.
- आशुतोष कुमार यादव, प्राण वह स्रोतस एवं इसका विकृतिजन्य अध्ययन, का.हि.वि.वि., 2004

आयुर्वेद की संहिताओं में वर्णित गर्भजन्यविकृतियाँ

– अनुभा श्रीवास्तव[1], अन्जना सक्सेना[2], आशुतोष यादव[3]
e-mail : hianubha27@gmail-com

प्रस्तावना–

आयुर्वेद चिकित्सा विधा अनादि शाश्वत एवं सारगर्भित आयुर्वेद संहिताओं में वर्णित प्रसंग सूत्र आज भी उतने ही व्यावहारिक है जितने ये पूर्व काल में रहे होंगे। जैसा कि हम सब जानते है कि आधुनिक चिकित्सा से हम सभी रोगों या विकृतियो का निवारण नहीं कर पाते हैं। आज भी पूरी दुनिया गर्भजन्यविकृतियाँ जैसे कि Hydrocephaly, Meningomylocoel, Cleft palate, syndacyly, polydactyly, Autism, Down's syndrome, ADHD कुब्ज, कुणि, मूक, मिनमिन एवं अन्य आयुर्वेद वर्णित विकृतियों की सार्थक चिकित्सा नही कर पायी है वहीं आयुर्वेद संहिता ग्रंथो में गर्भजन्य–विकृतियों का प्रासंगिक वर्णन करते हुए उनके विभिन्न कारण एवं साथ ही ये विकृतियाँ उत्पन्न न हो उसके लिए माता के आचार, आहार, विहार का वर्णन किया है आयुर्वेद में वर्णित आहार–विहार दिनचर्या का पालन कर गर्भिणी एक स्वस्थ बच्चे को जन्म दे तथा स्वस्थ समाज एवं देश में उसका योगदान सम्पूर्णरूप से हो।

गर्भ विसङ्गतियाँ और गर्भजन्यविकृतीयाँ :–

(1) आयुर्वेद मतानुसार

आयुर्वेद संहिताओं में गर्भजन्यविसङ्गति एवं गर्भजन्य विकृतियों का विश्लेषण अत्यन्त विस्तार से किया गया है । आयुर्वेद मतानुसार गर्भ की जन्म के साथ प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रुप से होने वाली विकृतियाँ अर्थात् विकृत, हीन, अधिक, कम विकल इन्द्रियों का होना, गर्भ जन्य विकृतियाँ होती है।

आचार्य चरकानुसार :–

'कस्मात् प्रजां स्त्री विकष्तां प्रसूते हीना–धिकाविकलेन्द्रियाँ वा। (चरक शारीर स्थान 2/28)

क्या कारण है जिससे स्त्री हीन या अधिक, या विकलेन्द्रिय (इन्द्रिय शून्य) संतान को जन्म देती है।

बीजात्मकर्माशयकालदोषैर्मातुस्तथाऽऽहार विहार दोषैः।

कुर्वन्ति दोषा विविधानि दुष्टाः संस्थान वर्णेन्द्रिय वैकष्तानि।। (चरक शारीर स्थान 2/29)

वर्षासु काष्ठाश्मधनाम्बु वेगास्तरोः सरित्स्रोतसि सस्थितस्य।

अथैव कुर्युविकृतिं तथैव गर्भस्य कुक्षौ नियतस्य दोषाः।। (चरक शारीर स्थान 2/30)

जब बीज अर्थात् शुक्र शोणित, पूर्वजन्म कृत अशुभ कर्म, गर्भाशय विकृति, कालदोष, माता के गर्भावस्था मिथ्या आहार–विहार करने से तथा अन्य विविध कारणो से विकृत वातादि दोष, गर्भ की आकृति (संस्थान) वर्ण और इन्द्रियों को विकृत कर

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, रचना शरीर विभाग, [2]असिस्टेंट प्रोफेसर, प्रसूति एवं स्त्री रोग विभाग, [3]एसोसिएट प्रोफेसर, रचना शरीर विभाग, राजकीय आयुर्वेद स्नातकोत्तर महाविद्यालय एवं चिकित्सालय, वाराणसी, उ0प्र0

देते है। जिस प्रकार वर्षाकाल में संयोजगवश यदि वृक्ष नदी के स्रोत में गिर जाये, तो जिस प्रकार काष्ठ, पत्थर से संयुक्त होने पर, नदी के भंयकर वेग उसे अनिश्चित रुप से विकृत कर देते है, वैसे ही गर्भाशय में विकृत वातादि दोष गर्भ को अनिश्चित रुप से विकृत कर देते है।

आचार्य उवाच–

''यदा स्त्रिया दोष प्रकोपणोक्तान्यासेवमानाया दोषाः प्रकुपिता''। (चरक शारीर स्थान 4/30)

जब स्त्री, वातादिदोषों को प्रकुपित करने वाले आहार–विहार का सेवन करती है तो वातादि दोष कुपित होकर, शरीर में फैलते हुए रक्त और गर्भाशय को प्राप्त करते है, परन्तु सम्पूर्ण रक्त अथवा गर्भाशय को दूषित नहीं करते है ऐसी स्थिति में जब स्त्री गर्भधारण करती है तो उस गर्भ के मातृज एवं पितृज अवयवो या किसी एक या अधिक अवयवो में विकृति उत्पन्न हो जाती है। जिस–जिस अवयव के बीज में अथवा बीज भागों में दोष प्रकुपित होते है उन–उन बीजों या बीज भागों से उत्पन्न होने वाले अवयवो में विकृति होती है।

आचार्य सुश्रुतानुसार :–

सर्पवृश्चिककूष्माण्ड विकृताकृतयश्च येः

गर्भास्त्वेते स्त्रियाश्चैव श्रेयाः पापकृता भृशम्। (सुश्रुत शारीर स्थान 2/52)

गर्भो वातप्रकोपेण दौह्दय वावमानिते

भवेत् कुब्जः कुणि पंगुर्मूको मिन्मिन एव च

मातापित्रोस्तु नास्तिक्यादशुभैश्च पुराकृतैः ।

सर्प, वृश्चिक कूष्माण्ड आकार के जो विकृत गर्भ, जो स्त्रियो को होते हैं वे अधिकांशत उनके पूर्व कृत पाप कर्म से होते है तथा गर्भावस्था में वात प्रकोप से, दौह्रद अवमानना से उत्पन्न होने वाला गर्भ–कुबड़ा कुणि, पङ्गु मूक अथवा मिन्मिन (जिसका उच्चारण नासा से होता है) आदि विकृतियों से ग्रसित होता है। साथ ही माता–पिता की नास्तिकता से, पूर्वजन्मकृत अशुभ कर्मो से और वातादि दोषों के प्रकोप से विकृत गर्भ उत्पन्न होता है।

आचार्य वाग्भट के अनुसार :–

वातलैश्च भवेद्गर्भ कुब्जानध जड़वामनमः ।

पित्तैलः खलतीः पिंगः श्वित्री पांडु कफात्मभिः।।

(अष्टांग ह्रदय शारीर स्थान अ0 1/48)

वातप्रधान वस्तुओ के अधिक सेवन से गर्भ कुबड़ा अंधा जड़ तथा बौना (वामन्) होता है। पित्त प्रधान वस्तुओं के सेवन से गंजा तथा पिंगल वर्ण तथा कफप्रधान वस्तुओं के सेवन से श्वित्र तथा पाण्डु का रोगी होता है।

अर्थात् आयुर्वेद की प्राचीन संहिताओं में गर्भजन्य विकृतियाँ (बर्थ डिफेक्ट) का सम्यक् वर्णन है जिसमें शरीर की विकलांगता (कुब्ज, वामन पङगु) तथा जड़ अन्धता जैसी जन्मजात विकृतियों को भी वर्णित किया गया है।

आचार्य हारीत के अनुसार :–

विरुद्धवाहसेवाभिस्तथा गर्भव्यथासु च ।

अतिमुर्दनपीडायाः पीडा प्राप्नोति चागर्भकः ।।

तिर्यग्वापि च गर्भस्य व्यक्ता द्वारं भगस्य ।

अन्यदवा म्रियतेअपत्यम तेन कष्टं प्रपदयते ।।

हारीतजी ने कहा है कि विरुद्ध आहार के सेवन से गर्भ में विघ्न पडने या गर्भस्थ शिशु के

मस्तक में वेदना होने से गर्भ पीडा होती है । गर्भ सीधा न रहकर तिरछा हो जाता है अथवा गर्भ के मृत होने से कष्ट की अनुभूति होती है ।

(2) आधुनिक मतानुसार टेरोटोलाजी (Teratology) और गर्भजन्य विकृतियाँ :–

टेराटोलाजी शब्द की उत्पत्ति 1830 में ग्रीक वर्ड 'टेरास' से हुई है जिसका अर्थ मोनेस्टर या मारवल या राक्षस होता है जो कि विकृति दर्शाता है। आधुनिक परिवेश में टेरोटोलाजी बर्थ डिफेक्ट और मालफारमेशन को वर्णित करता है। इसके अतिरिक्त कुछ और टर्म बर्थ डिफेक्ट के समानार्थी है जैसे–

कन्जाइनाइटल एनामली, कन्जाइनाइटल फिजिकल एनामली (congenital Physical anomalies), कन्जाइन्टल माल फारमेशन, कन्जाइनाइटल जेनेटिक डिसआडर (congenital Genetic disorders) आदि।

टेरोटोलाजी (Teratology) चिकित्सा विज्ञान की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत जन्मजात असामान्यताओं और विकृतियों का अध्ययन किया जाता है, ये विकृतियाँ मानसिक और शारीरिक दोनो प्रकार की होती है।

प्रकार :–

(1) कुछ जन्मजात विकृतियाँ शरीर रचना में होती हैं एवं ये शारीरिक सुन्दरता कम कर देती हैं, परन्तु यह साधारण समस्या के रुप में होती है जैसे–

(क) पाँचवी अगुंली की वक्रता।

(ख) तीसरे स्तन्य चुचुक (Third nipple) की उपस्थिति।

(ग) छँठवीं अगुली की उपस्थिति।

(घ) रीढ़ की निचले पार्ट में गड्ढ़े (dimples) की उपस्थिति आदि।

(2) कुछ जन्मजात विकृतियाँ जो शारीरिक रचना के आधार पर एवं हानिकारक होती है।

माइक्रोसेफेली, हाइड्रोसेफेली, एनासेफेली, मैनिंगो माइलोसील (Menigo mylocoel), क्लैफ्ट पेलेट (Cleft Plate), क्लैफ्ट लिप्स (Cleft lips)

(3) कन्जेनाइटल मेंटाबालिक डिसीसेस (Congenital metabolic disorder) आदि भी जन्मजात विकृतियों के अन्तर्गत आती है।

(4) जेनेटिक डिसॉर्डर (Genetic disorder) ये भी सभी जन्मजात विकृतियाँ होती है जो जरुरी नहीं है कि जन्म के समय प्रदर्शित हो ये जीवन में देर से भी प्रकट होती है या जन्म के कुछ समय बाद पहचान में आती है। माँ के गर्भाशय में गर्भ बाहरी तत्वों (प्रतिकूल) से सुरक्षित रहता है, परन्तु 1960 में थैलोडामाइड डिसास्टर के बाद ये बात सामने आई की सभी नवजात शिशुओं में लगभग 3–5 प्रतिशत शिशु गर्भजन्य विकृतियाँ से ग्रसित रहते हैं जिनमें 65 प्रतिशत शिशुओं के विकृतियों का कारण नहीं पता चल पाता है। पहले ये माना जाता था कि मैमेलियन एम्ब्रियो जो गर्भाशय में विकसित हो रहा है वो माँ के गर्भ में बाहरी तत्वों के प्रभाव से (प्रतिकूल) सुरक्षित रहता है, परन्तु 1960 में थैलोडामाइड डिसास्टर के बाद ये बात सामने आयी कि ऐसा नहीं है गर्भस्स्थ शिशु पर भी बाहरी वातावरण का प्रभाव पड़ता है।

यूनाइटेड स्टेट में 20 प्रतिशत से भी ज्यादा नवजात शिशुओं की मृत्यु का कारण गर्भजन्य

विकृतियाँ है। जिसमें 7–8 प्रतिशत नवजात शिशुओं को वृहद चिकित्सा सेवा की जरुरत पड़ती है। अर्थात् टेरोटोलाजी विज्ञान की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत हम, कारण, तरीका तथा असामान्य विकास एवं वातावरण के कारक (Factor) or टेरोटोजीनस के बारे में पढ़ते है। (Moore and Persaud, 2008) द्वारा–(Paleopathlogy of children, 2018)

जेम्स विलसन एवं फ्रेजरर द्वारा लिखित पुस्तक, (1977) ''हेण्ड बुक ऑफ टेरोटोलाजी'' (Handbook of Teratology) गर्भजन्य विकृतियों को समझने की स्टैण्डर्ड बुक है। तथा Wilson's 6 principles निरन्तर सांइटफिक रिसर्च एवं शिक्षा में मार्गदर्शन के लिए उपयोग की जाती है)। 2010. wiley-liss, Inc PMIO-20 706993 (Indexed for Medline)

टेरोटोजेनेसिस (Teratogenesis) :–

गर्भस्थ शिशु में, गर्भजन्य विकृति के पैदा होना या गर्भजन्य विकृतियाँ पैदा कराना (Induction) रिसर्च वर्क में होता है। टेरोटोजेनेसिस कहलाता है।

टेरोटोजिन (Teratogen) ऐजेन्ट :–

जो गर्भस्थ शिशु में विकृति पैदा करने के कारक है जैसे–रेडिएशन, इन्फेंक्शन (Infections), मेटाबॉलिक इमबेलेन्स (Metabolic imbalance), कुछ दवायें आदि।

टेरोटोजिनिक गुण ऑफ नारकोटिक ऐजेन्टः–

1. एल्कोहल :– फेशियल विकृति, डिफेक्टिव लिम्ब्स (Defective limbs), हार्ट (Heart)

2. निकोटिन :– (वजन कम होना) लो बर्थ वेट, प्री टर्म, श्वसन समस्याएँ सडन इनफेन्ट डेथ सिंड्रोम (Sudden infant death syndromes) अचानक से शिशु की मृत्यु होना।

3. मारीजुआना :– कम्पवात, स्मरण शक्ति (Memory) और बोलने की शक्ति का कम विकसित होना।

4. हेरोइन (Heroin) :– कम्पवात (Tremors), असामान्य रोना, असामान्य निद्रा मोटर कन्ट्रोल का कम विकसित होना, इरेटेविलिटि (Irritability)

5. कोकेन (Cocaine) :– हाइपरटेशन, हृदय सम्बन्धी समस्याएँ, याद करने की क्षमता का कम होना, शरीर विकास कम होना।

विमर्श :–

शुक्र–शोणित के स्वरुप का ज्ञान, उनके संयोग की प्रक्रिया, संयोग से उपरान्त उत्पन्न होने वाले भाव, आनुवंशिक सिद्धान्त, शुक्र–शोणित के बीज भाग, उनका परिवर्तन, लिङ्गभेद के कारण एवं आकृति देने वाले कारणों के साथ वृति का भाव एवं अंग–प्रत्यंगो का उत्पत्तिक्रम तथा गर्भ के पोषण आदि प्रक्रिया एवं सिद्धान्तों का विस्तृत वर्णन आयुर्वेद संहिताओं में किया गया है । आचार्य काश्यप ने गर्भावस्था की अवस्थाओं को वय के वर्गीकरण के साथ में बताया है। गर्भस्थ शिशु के भविष्य की वृद्धि एवं विकास में उसकी गर्भावस्था काल का बहुत महत्व होता है। शिशु के जीवन में सबसे ज्यादा वृद्धि एवं विकास की घटना उसके जन्म से पहले होती है। यह बदलाव अधिक सोमेटिक (Physical part) होता है। एक सिंगल सेल अर्थात जायगोट 2–3 किलोग्राम के नवजात शिशु के रुप में जन्म

लेता है और उसका व्यवहार, मानसिक स्थिति भी इसी पर निर्भर करती है। अतः गर्भावस्था में होने वाला अच्छा या दूष्य प्रभाव गर्भस्थ शिशु को प्रभावित करता है एवं सुप्रजा अथवा मानसिक एवं शारीरिक विकलांगता युक्त शिशु के जन्म का कारण बनता है।

निष्कर्ष :–

आयुर्वेद की प्राचीन संहिताओं में गर्भजन्य विकषतियाँ (बर्थ डिफेक्ट) का सम्यक् वर्णन है जिसमें शरीर की विकलांगता कुब्ज, वामन, पङगु, जड़, अन्धा तथा वार्ता, तृणपुत्रिक, पूतिप्रजा, द्विरेता, पवनेन्द्रिय जैसी जन्मजात विकृतियां बीजभागावयव के दूषित होने से होती हैं जो आधुनिक मतानुसार वर्णित क्रोमोसोमल डिर्साडर से मिलती जुलती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. "Birth Defects & Genetics: Birth Defects". Retrieved on 2007-05-30
2. Dicke JM (1989). "Teratology: principles and practice". *Med. Clin. North Am.* **73** (3): 567–82. PMID 2468064
3. ***a b*** Ronan O'Rahilly, Fabiola Müller (2001). *Human embryology & teratology*. New York: Wiley-Liss. ISBN 0-471-38225-6
4. James G. Wilson,. *Environment and Birth Defects (Environmental Science Series)*. London: Academic Pr. ISBN 0-12-757750-5
5. Bracken MB, Holford TR (1981). "Exposure to prescribed drugs in pregnancy and association with congenital malformations". *Obstetrics and gynecology* **58** (3): 336–44. PMID 7266953
6. King CR (1986). "Genetic counseling for teratogen exposure". *Obstetrics and gynecology* **67** (6): 843–6. PMID 3703408
7. Linnainmaa K (1983). "Sister chromatid exchanges among workers occupationally exposed to phenoxy acid herbicides 2,4-D and MCPA". *Teratog., Carcinog. Mutagen.* **3** (3): 269–79. doi:10.1002/1520-6866(1990)3:3<269::AID-TCM1770030306>3.0.CO;2-F. PMID 6137083
8. Vaglenova J, Birru S, Pandiella NM, Breese CR (2004). "An assessment of the long-term developmental and behavioral teratogenicity of prenatal nicotine exposure". *Behav. Brain Res.* **150** (1-2): 159–70. doi:10.1016/j.bbr.2003.07.005. PMID 15033289
9. Hunt JR (1996). "Teratogenicity of high vitamin A intake". *N. Engl. J. Med.* **334** (18): 1197. doi:10.1056/NEJM199605023341814. PMID 8602195
10. चरक संहिता, यदुनन्दन उपाध्याय, भाग–1, चौखम्भा पब्लिकेशन, वाराणसी– 2007
11. सुश्रुत संहिता, अम्बिकादत्त शास्त्री, भाग–1, चौखम्भा पब्लिकेशन, वाराणसी– 2008
12. अष्टांग हृदय, अत्रिदेव, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी– 2005
13. काश्यप संहिता, प0 हेमराज शर्मा, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी– 2010
14. हारीत संहिता, प0 हरिहर प्रसाद त्रिपाठी, चौखम्भा कृष्णदास एकेडमी, वाराणसी– 2009
15. Matters from different websites.

Dr. Ganga Sahay Pandey Memorial All India U.G. Essay Competition- 2020 (Gold Medal First Prize Winner)

AYURVEDA: OPENING NEW DIMENSIONS IN COVID ERA

- Diwas Kumar Sethi[1]
e-mail : diwassethi123@gmail.com

ABSTRACT :

The current COVID-19 pandemic is one of the worst healthcare challenges in recent decades, which has affected the humankind, societies, economy, healthcare services around the globe and will certainly going to reshape to a great extent the approach toward them as it continue to unfolds. A definite treatment and vaccine for this disease is not yet available, and the disease is spreading continuously worldwide. Highly contagious nature of the disease, efforts to search newer vaccines and drugs remains quite challenging, further the inevitability of future pandemics, the importance of preservation of health and immunity will certainly have a major role to play. The Ayurveda have description of epidemic, along with their management, under the heading Janapadodhwansa with their management. Also, Aupasargika Roga/ Sankramaka Roga (infectious diseases), indicates the significance attributed to contagious nature of the communicable diseases. Appropriate life-style measures such as good personal and social conduct, balanced nutritious diet, immune boosting as well as anti-viral herbs would complement to prevent and treatment of this diseases. This is an attempt to briefly review the new dimensions and Role of Ayurveda in the COVID era.

Keywords: *Ayurveda, COVID-19, Immunity, Health, Janapadodhwansa, Aupsargika roga*

INTRODUCTION:

Ayurveda's concept of diseases and treatments are different from other systems of medicine and with its wide scope embracing preventive, curative and positive aspects. The primary objective of Ayurveda is Swasthasya Swasthya Rakshanam (disease preventive and health promotive aspect).

प्रयोजनं चास्य (आयुर्वेदस्य) स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणमआस्तुरस्य विकारप्रशमनं च।

(C.S.Su.30/26)

Through Dinacharya (daily routine regime), Ritucharya (seasonal regime),

[1]*Final Year, B.A.M.S. Student, North Eastern Institute of Ayurveda and Homoeopathy (NEIAH), Mawdiangdiag, Sillong-793018*

Ahara-Vihara (diet and life style), Pathya-Apathya (do's and don'ts), Sadvritta, (social norms) and the real value of Ayurveda lies in its basic principles, including its unique concepts of Panchamahabhuta (Five elements), Prakriti (Constitution), Guna (Quality), Rasa (Taste), Agni (Gastric fire), Dosha (Humour), Dhatu (Tissues), Mala (Faeces), Srotas (Channels), and its personalized approach to Nidan (Etiology), Chikitsa (Treatment) and Rasayana (rejuvenation therapy) . It helps to prevent contagious diseases and maintain health of individuals as well as community.

The classical texts of Ayurveda describe many principles relevant to public health such as infectious disease, immunity, nutrition etc. Entire world is looking towards Ayurveda for prevention, treatment and also to reduce post COVID-19 complications. Despite worldwide efforts to contain it, the pandemic is continuing to spread for want of a clinically-proven prophylaxis and therapeutic strategy. The dimensions of pandemic require an urgent harnessing of all knowledge systems available globally. Utilization of Traditional Chinese Medicine in Wuhan to treat COVID-19 cases sets the example demonstrating that traditional health care can contribute to treatment of these patients successfully. Drawing on the Ayurveda classics, contemporary scientific studies, and experiential knowledge on similar clinical settings, here we propose a pragmatic plan for intervention in India. We provide a plan for graded response, depending on the stage of infection among individuals, in a population. Notwithstanding the fact that no system of medicine has any evidence-based treatment for COVID-19 as yet, clinical interventions are required to be put in place. Therefore, pragmatic strategy proposed here for Ayurveda system of medicine requires immediate implementation. It will facilitate learning, generate evidence and shall be a way forward.

WHO (World Health Organization) on 12th March,2020 on Corona virus disease -2019 (abbreviated "COVID-19") cases-"2,42,99,233" no's of confirmed cases and 8,27,730 deaths are reported as on 29th August,2020. (www.who.co.in). It is mostly similar to Severe Acute Respiratory Syndrome Corona Virus (SARS-CoV-2) and bat corona virus. The epicentre of this new strain of novel corona virus 2019 is Wuhan, Hubei, China identified in December, 2019. It is mostly similar to severe acute respiratory syndrome corona virus (SARS-CoV-2) and bat corona virus. The cases initially outbreak from Wuhan, but spread rapidly worldwide (www.who.co.in)

Fundamental and rationale thoughts Communicable disease and Ayurveda:

Sushruta describes the Sankramaka Roga as Aupsargika Roga (communicable or contagious diseases) that spread through coitus (syphilis, gonorrhoea), contact

(leprosy, chickenpox), droplet (Tuberculosis , Pneumonia) , dine together, (diarrhoea , typhoid), sleeping with (skin disorders), use of infectious clothes, garland, paste etc. (Su.S.Ni.5/32) Charaka states that root cause of Janapadodhvansa (epidemic fall down) is Adharma (unrighteousness/ bad conduct) which leads to Pragyaparadha (intellectual blasphemy, disturbance in intellect, memory disturbance). This ultimately polluted the environmental factors like air (Vayu), water (Jala), soil (Desh), and time (Kala). This vitiated Vayu (air, environment), Jala (water), Desha (region, state, country), Kala (Season) leads to ravage of Janapada (community).(C.S.Vi.3/ 6-10)

Sushruta also mentioned the consequences of epidemics in the classics as Kadachit Vyapanney Swapi Ritusu (derangement in seasons), Kritya (wrong Karma), Abhishap (curse of animals and kinds), Rakshas (demons, viruses, bacteria), Krodha (anger, disrespectful), vitiated air, vitiated water, nation specific convert are mutant etc. These results in manifestation of various diseases in community like fever, coughing, breathlessness, vomiting, running nose headache in form of epidemics (Marak).(Su.S.Su.6/19)

The aspect of epidemic care and restored well-being conditions may achieved via Sthana Parityaga (isolate from the affected area, change of place), Shantikarma (treatment, pacifying action), Prayaschit (atonement), Mangal (undertaking auspicious acts), Japa (repeated recitation of sacred incantations), Hom (lighting of sacrificial fires for air purification), Upahar (gift right scene),etc.(Su.S.Su.6/22)

Although the above aspects are older than modern science but still valuable in current scenario to prevent the spread of COVID-19.

Role of Ayurveda in Combating COVID-19:

The age old traditional system of medicine of India, Ayurveda sites certain concepts on targeting a disease management by uplifting the immunity of a person through use of various Dravyas(Substances)- pharmacological activity and non-pharamcological activity. Among the tri-dandas (concept of three factors which is responsible for keeping the Tri- dosas in homoeostasis), Ahara (Food) and Nidra (Sleep) will be discussed in context to the proposed hypothesis.

Diet: The quote Ahara Shudhhi Satva Suddhhi" clearly indicates that clean Ahara makes sanctified conscience. The intake of clean balanced diet at suitable place (with proper regards without any hurry-worry), Satva Guna Yukta Ahara, identified Ahara, in proper quantity and avoidance of incompatible diet are the general norms in traditionalpractices.

Bala/Oja (Immunity):

The concept of Oja or Bala mentioned in Ayurveda is indicative of innate immunity. Many Ayurvedic therapeutic procedures and herbal drugs are indicated for the enhancement of innate immunity (Vyadhikshamatva). It is achieved by two approaches viz., Vyadhi Bala Virodhitva &Vyadhyutpadaka Pratibandhakatva. Among them Vyadhibala virodhitva is achieved by improving the immunity of an individual's body, while Vyadhyutpadaka Pratibandhakatva is acquired by using certain Ayurvedic therapies. (C.S.Su/8/19) The contagious disease like COVID-19 mainly affects the immune compromised person and may results lethal.

Rasayana- (Rejuvenation and Immune enhancer):

In Ayurveda Rasayana therapy (antioxidant/ rejuvenation therapy) is most suitable for the enhancement of the immunity. Also, many herbs like Guduchi (Tinospora cordifolia (Thunb.) Miers), Bala (Sida cordifolia), Amalaki (Emblica Officinalis Gaerten), Yastimadhu (Glycyrrhiza glabra Linn), Ashwagandha (Withania somnifera (Linn.) Dunal), Tulsi (Occimum santum), Pippali (Piper longum L), as well as medicinal formulations like Chyavanaprasa, Vardhmana Pippali Rasayana, Agaystha Haritaki etc. potentially boost the Bala (immunity) of the persons. (C.S.Vi.3/14-17)

Dhupana (Fumigation methods):

Fumigation of the house and adjoining areas every evening with antimicrobials herbs. The combination of Sarsapa, Nimba Patra, Ghrita, Lavana (Salt) is practice as dhupan from the ancient time which act as antiseptic measures. Many herbal Dhupana Drvayas like Laksha (Laccifer lacca), Haridra, Ativisha (Aconitum hetrophyllum wall. ex royale), Tamal Patara (Cinnamomum Tamala) , Kushta (Saussurea lappa c.b.clerk),etc. also useful (Su.S.Su.19/28)

Gateway to new dimensions for Ayurveda:

Ayurveda has ability to treat many chronic diseases such as cancer, diabetes, arthritis, and asthma, which are untreatable in modern medicine. Unfortunately, due to lack of scientific validation in various concepts, this precious gift from our ancestors is trailing. Hence, evidence-based research is highly needed for global recognition and acceptance of Ayurveda, which needs further advancements in the research methodology.

The various fields of research including literary, fundamental, drug, pharmaceutical, and clinical research in Ayurveda. Encouraging young researchers to work on various areas of research for the development and promotion of Ayurveda.

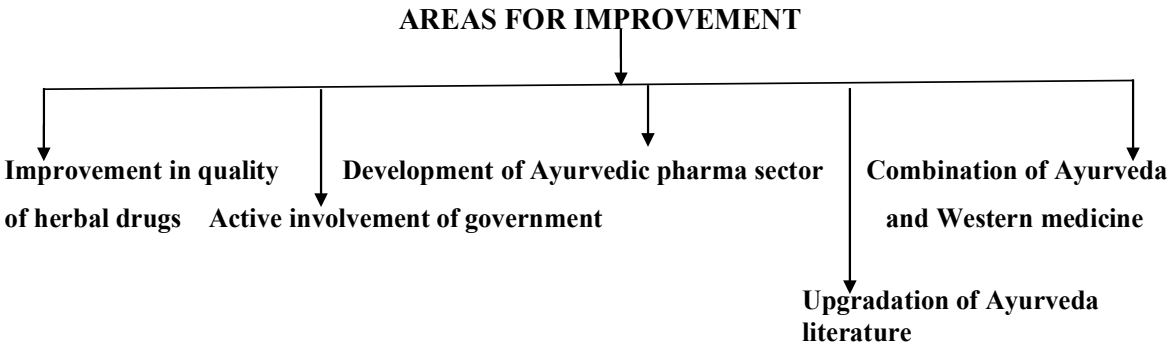

There are many more dimensions to be taken care for Ayurveda to be part of **Central health care system** and the encouragement from the base for the students who are to join the Ayurveda UG course after the entrance withdraw the course due the lack of knowledge of Sanskrit in various parts of India especially NorthEast India, South India,etc, and for this the GOI should have strong implementation for the Sanskritam as a compulsory subject from the primary high school so that students are not afraid to face a new language all of a sudden to join Ayurveda and if it is implemented then we would see the best of results as we would see students reading Sahmitas and getting to the depth and starting the implementation of its actual meaning right from entering the course of Ayurveda with ease.

Improvement in quality of herbal drugs

Herbal extracts of therapeutic relevance are of great importance as reservoirs of structural and chemical diversity. Interestingly, more than 120 distinct phytochemicals from different plants have capability as lifesaving medicines. These compounds have been achieved through chemical and pharmacological screening of only 6% of the total plant species.

Moreover, a variety of drugs of immune-modulating capacity from traditional medicine can provide newer opportunities to improve therapeutic spectrum.

Active involvement of Government:

Some steps taken by Ministry of AYUSH during covid era, following the Dinacharya, mantaining hygiene, other existing immunity boosting measures as advised by Mo Ayush for the prevention of the healthy,etc. The government also should be prepared a timeframe roadmap for the progressive development of Ayurvedic education and research. Science-based approaches may be promoted, utilized, and inculcated in the

education of Ayurveda like traditional Chinese medicine (TCM).

Development of Ayurvedic Pharma sector and Quality control

The drug manufacturing industries and other supporting industries play important role in the development of Ayurvedic medicine. The whole supporting system, i.e., raw material collectors, dealers, processing and manufacturing industries, Ayurveda practitioners, and consumers must be encouraged. Around 1100 medicinal plants are used as medicine and among them at least 60 plants are of great demand.

Upgradation of Ayurveda literature

Ayurveda is continuously facing constraints and difficulties from regulatory authorities and the scientific community, which is coming in the way of its global acceptance.

Combination of Ayurveda and Western medicine

No doubt, Indian system of medicine has already received much attention in academic fields. The popularity of Ayurveda is mainly due to its therapeutic efficiency against most chronic diseases where modern medicines are ineffective.

Role of Ministry of AYUSH

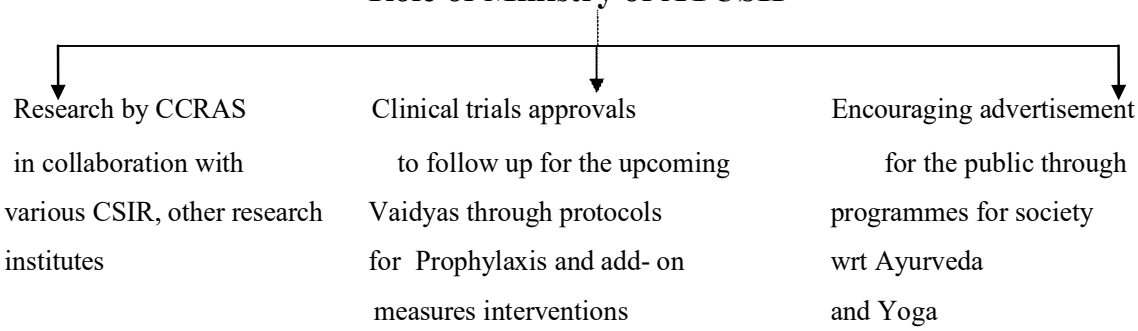

There have be an apparent change seen in the people for the shift from the disease cure oriented services to the health maintenance services where people are now going towards the preventive health care from diseases that is making body strong and with improved immunity to have a healthy life, post COVID-19 crisis.

The Ministry of Ayush is marching towards for the evidence based medicine of the Ayurveda counterpart. and reform in education systems, research and public health.

The Economic sector and its challenges

The herbal sector has got rise by four fold in its export orders since the pandemic, Positive growth >25% in the sales graph which is a boost for the companies to advertise more of the

AYUSH systems post-pandemic : The health and wellness tourism, immunity boosting from traditional medicines areas are going to see a exponential growth in its graph. The Keraliya Ayurveda tourism model is likely to benefit. The estimated growth of global market from $ 4.5 billion in 2017 $14.9 billion in 2026. This will certainly need to develop enterpreneurs in Ayurveda need and resurgence of interest toward traditional medicine so to convert this opportunity into reality. The Raw ingredients of *Ayurvedic* medicine are another challenge which needs to be taken with utmost priority to enable the industries provides quality medicines.

Materials and methods:

Literary study of Janapadodhwamsa thoroughly including classical treatises like Charak Samhita, Sushruta Samhita of Ayurveda was done. For contemporary review Standard textbooks of epidemiology were used for the study. Information is collected through WHO reports; pub-med, Scopus indexed journals. Approximate Modern terminology for the Ayurvedic terms was used according to CCIM, India

Discussion:

Prima facie, still there is no specific, evidence based and effective remedy available as yet to cure the COVID-19. Hence, preventive strategies are of prime significance. Ayurveda's prevention management like *Sadvritta* (habit of right onduct), daily regimen, seasonal regimen, *Panchkarma* (body purification), rejuvenation therapy, immune enhancer therapies. These are able to play a crucial role in prevention of communicable diseases. In Indian culture many health restoring and disease preventing aspects are in their culture. This may be a cost-effective choice in preventing the spread of the COVID-19 and many more infectious diseases. *Atmanirbhar bharat* is certainly important for us and the best way towards opening new dimensions of *Ayurveda* in India by its worldwide promotion and propagation.

Ayurveda has enough potential and possibilities to be employed both for prevention and treatment of COVID-19. This will provide an important opportunity for learning and generating credible evidence. It is pertinent to reiterate that participation of Ayurveda in addressing the COVID-19 challenge in India should not remain limited and seen as the extension of healthcare services and support to bio-medical system. Indeed, with adequate monitoring and data keeping during the implementation, important lessons and research directions are likely to emerge on the management of increasingly frequent and virulent communicable diseases. Implementation of proposed action is likely to provide evidence-based insights strengthening the scope of Ayurveda beyond preventive health care and care for non-communicable diseases.

AYUSH system across the country has been put on alert for being called anytime to serve the nation. AYUSH healthcare facilities are also being readied to be converted into quarantine facilities in times of need. From this perspective, implementing the suggested intervention plan within AYUSH healthcare facilities by Ayurveda workforce may benefit the nation greatly. India is the country where the world's oldest living health care system originated and therefore it is being carefully watched by the world community for how it handles the crisis using its own resources. China has done it. And it is India's turn now to show its traditional healthcare mighty help.

Conclusion:

"PREVENTION IS BETTER THAN CURE"

We can conclude that the post pandemic, *AYUSH/Ayurveda* is gearing up to cater the health care services in terms of wellness and preventive health. Also, the Ministry of AYUSH is committed in propagating advocacies on healthy lifestyle and use of common herbs and Yoga to make India self dependent in terms of Health. We the independent people of India, can contribute to the *Atmanirbhar Bharat* dream w.r.t. health by opting our own "Ancient Ayurveda principles for Preventive and curative aspect" along with the recent advances too and finally be Independent in the Health sector.

References:

1. https://www.who.int/emergencies/diseases/novel-coronavirus-2019 (Retrieved on 29/08/2020)
2. https://www.ayush.gov.in/docs/ayurveda.pdf (Retrieved on 28/08/2020)
3. Agnivesha, Sharma RK and Dash B. Charaka Samhita, Chaukhambha Sanskrita Series, Varanasi.
4. Shashtri Ambikadatta, Ayurved Tatva Sandipika Hindi commentary on Sushruta Samhita, Published by Chaukhambha sanskrita samsthan, Varanasi
5. Goswami DK, COVID-19: IN THE LIGHT OF SUSRUTA SAMHITA KALPASTHANA, European Journal of Biomedical AND Pharmaceutical sciences, Volume 7, Issue 5,625-627
6. Goswami A, Barooch PK, Sandhu JS. Prospect of herbal drugs in the age of globalization– Indian scenario. J Sci Ind Res. 2002;61:423–43.
7. Mishra S, Gupta AK, Kedar LM. Concept of research methodology in Ayurveda. Int Ayurvedic Med J. 2013;1:1–5.
8. Patwardhan B, Warude D, Pushpangadan P, Bhatt N. Ayurveda and traditional Chinese medicine: A comparative overview. Evid Based Complement Alternat Med. 2005;2:465–73.
9. Rastogi S et al., COVID-19 pandemic: A pragmatic plan for ayurveda intervention, J Ayurveda Integr Med, https:// doi.org/10.1016/j.jaim.2020.04.002
10. Sudha VB, Ganesan S, Pazhani GP, Ramamurthy T, Nair GB, Venkatasu bramanian P. Storing drinking-water in copper pots kills contaminating diarrhoeagenic bacteria. J Health Popul Nutr. 2012;30:17–21.

परिषद् समाचार

धन्वन्तरि प्रकाशोत्सव पूरे देश में धूम–धाम से मनाया गया। सभी राज्यों में विभिन्न स्थानों पर विश्व आयुर्वेद परिषद् के तत्वावधान में आयुर्वेद प्रवर्तक भगवान धन्वन्तरि जयन्ती का विस्तृत कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। व्याख्यान, प्रश्नोत्तरी, जन जागरण, हवन, निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण एवं औषधि वितरण आदि कार्यक्रमों के माध्यम से जनता एवं समाज के मध्य धन्वन्तरि पूजा का विशेष महत्व रहा। लगभग सभी प्रदेशों से इस प्रकार के समाचार प्राप्त हुए, जिनमें सरकारी, निजी चिकित्सालयों नर्सिंग होम, आयुर्वेद महाविद्यालय आदि सम्मिलित थे। पूरे विश्व की स्वास्थ्य कामना का उद्देश्य लेकर इस कोरोना काल में अधिकतर कार्यक्रम आनलाइन के माध्यम से हुए।

धन्वन्तरि जयन्ती के अवसर पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

धन्वन्तरि जयन्ती एवं राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस के अवसर पर एक आभासी राष्ट्रीय संगोष्ठी को दिनांक 13 नवम्बर को आयोजन सम्पन्न हुआ, जिसमें सम्पूर्ण भारतवर्ष से परिषद् के कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों, चिकित्सकों एवं छात्र–छात्राओं ने सहभाग लिया। इस कार्यक्रम में सर कार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ माननीय भैया जी जोशी एवं वैद्य जयन्त देव पुजारी, अध्यक्ष बोर्ड ऑफ गवर्नस, सी.सी.आई.एम., नई दिल्ली की गरिमामयी उपस्थिती रही। माननीय भैया जी जोशी ने अपने सम्बोधन में कहा कि आयुर्वेद के विद्यालयों के अतिरिक्त देश की अन्य शिक्षण संस्थाओं में भी भारतीय जीवन शैली, आहार–विहार एवं स्वास्थ्यप्रद दिनचर्या विषय में जानकारी प्रस्तुत करना बहुत महत्वपूर्ण है। इस कार्य में सरकार के द्वारा यदि कोई कार्यक्रम हो सके तो बहुत अच्छा रहेगा। लेकिन यदि शासन इस और कार्य न करें, तो भी परिषद को इस कार्य को प्राथमिकता से अपने हाथ में लेना चाहिए। जब आयुर्वेद की स्वीकार्यता बढ़ेगी तो आयुर्वेद और संगठन का दायित्व भी बढ़ेगा यह बहुत बड़ी चुनौती है। इसके लिए भी देश के नेतृत्व को और संगठन को पूर्णतया तैयार होना चाहिए। आयुर्वेद औषधि निर्माण के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण विचार करना होगा। देश की जनसंख्या के अनुपात में आवश्यक औषधियों के लिए वनस्पतियो की जो, आज उपलब्धता है यदि वह कम है तो उसके लिए क्या उपाय करना चाहिए, एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। देश के किस क्षेत्र में किस औषधि का उत्पादन होगा, इसका विचार करते हुए शासन को नीति बनानी चाहिए। संगठन को इस दृष्टि से भी अपने परामर्श समय–समय पर सरकार और जनता को देते रहना चाहिए। कार्यक्रम में सी.सी.आई.एम. के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के चेयरमैन वैद्य जयंत देवपुजारी जी का मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ। श्री पुजारी जी ने सभी कार्यकर्ताओं को अपने अध्ययनशीलता को सदैव जागृत रखने का आग्रह किया। जिससे कि आयुर्वेद की पुरातन परंपरा और प्रखर रूप से लोगों के सामने आ सके। कार्यक्रम के प्रारंभ में वक्ताओं तथा विश्व आयुर्वेद परिषद का संक्षिप्त परिचय एवं स्वागत प्रोफेसर योगेश चंद्र मिश्र के द्वारा दिया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रोफेसर महेश कुमार व्यास द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन प्रो0 अश्विनी भार्गव राष्ट्रीय महामंत्री, विश्व आयुर्वेद परिषद्, के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

धन्वंतरि जयन्ती एवं आयुर्वेद दिवस समारोह का आयोजन लखनऊ में सम्पन्न

विश्व आयुर्वेद परिषद अवध क्षेत्र एवं लखनऊ महानगर द्वारा आयोजित धन्वनतरि पूजन कार्यक्रम। योगी पाइल्स एवं पंचकर्म सेन्टर इन्दिरा नगर में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में वैद्य अजय दत्त शर्मा, वैद्य वाचस्पति त्रिवेदी, वैद्य बृजेश गुप्ता, डॉ0 बी.पी. सिंह, डॉ0 मनदीप जायसवाल, डॉ0 अरूण कुमार पाणिग्रही, डॉ0 पंकज श्रीवास्तव, डॉ0 पंकज सिंह का विशेष सहयोग रहा।

भगवान धन्वन्तरि प्रकाशोत्सव, डॉ. गंगा सहाय पाण्डेय स्मृति व्याख्यान एवं अखिल भारतीय आयुर्वेद स्नातक छात्र निबन्ध प्रतियोगिता–2020 का पुरस्कार वितरण समारोह

विश्व आयुर्वेद परिषद के तत्वावधान में भगवान धन्वन्तरि प्रकाशोत्सव, डॉ. गंगा सहाय पाण्डेय स्मृति व्याख्यान एवं डॉ. गंगा सहाय पाण्डेय स्मृति आयुर्वेद स्नातक छात्र निबन्ध प्रतियोगिता–2020 का पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 12/11/2020 को ऑन लाइन माध्यम से किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ परिषद् गीत, धन्वन्तरि वन्दना, दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण के साथ किया गया। स्वागत भाषण डॉ. सुरेंद्र चौधरी, अध्यक्ष उत्तर प्रदेश इकाई विषय प्रस्तावना डॉ. कमलेश कुमार द्विवेदी; मंच संचालन डॉ. अनुराधा राय एवं डॉ. मनीष मिश्र ने किया। विशिष्ट अतिथि प्रो. अनुप ठाकर ने कोविड के कारण होने वाले परिवर्तन एवं उनसे बचाव के ऊपर ध्यान आकर्षित कराया। सारस्वत अतिथि प्रो. बलदेव कुमार धीमान, कुलपति, श्री कृष्ण आयुर्वेद विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र ने छात्रों का आह्वान करते हुए कोविड काल में आयुर्वेद से चिकित्सा प्रोटोकोल का सम्पूर्ण विवरण देते हुए इसके उपयोग करने की सलाह दी। प्रो. करतार सिंह धीमान, डायरेक्टर जनरल, सी. सी.आर.एस., नई दिल्ली ने कोविड काल में आयुर्वेद के नये आयाम विषय पर प्रस्तुति करते हुए बताया कि आने वाला समय काफी कठिन होगा, जिसमें हमको आयुर्वेद को अपनाते हुए अपने जीवन शैली में भी सकारात्मक परिवर्तन करना होगा। उन्होंने देश भर में हो रहे शोधो के बारे में ध्यान दिलाते हुए अद्यतन विकसित एवं परीक्षित आयुर्वेद औषधियों की चर्चा तथा उपयोग पर बल दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. अशोक कुमार वार्ष्णेय, राष्ट्रीय संगठन मंत्री, आरोग्य भारती एवं समन्वयक विश्व आयुर्वेद परिषद ने छात्रों को इस कोविड काल में होने वाले आर्थिक, सामाजिक चिकित्सकीय परिवर्तनों एवं परिणामों से अवगत कराते हुए समाज के हर वर्ग को इसके लिए कार्य करने की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ0 सत्येन्द्र प्रसाद मिश्र, सदस्य मार्गदर्शक मण्डल ने भावी कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से बताया। प्रोफेसर योगेश चंद्र मिश्र, राष्ट्रीय संगठन मंत्री, विश्व आयुर्वेद परिषद ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर छात्रों को एकजुट होकर कार्य करने की सलाह दी। डॉक्टर पीयूष त्रिपाठी ने गंगा सहाय पाण्डेय के वृत्त का वाचन किया। कार्यक्रम के अन्त में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. विजय राय, महासचिव, विश्व आयुर्वेद परिषद उत्तर प्रदेश ने किया।

प्रथम पुरस्कार स्वरूप स्वर्ण पदक एवं रुपये 15000/– नगद श्री दिवस कुमार सेठी, नार्थ ईस्टर्न इंस्टीट्यूट ऑफ आयुर्वेद, शिलांग; कुमारी अनन्या सेन, गोपबंधु आयुर्वेद महाविद्यालय, पुरी को द्वितीय पुरस्कार स्वरूप रजत पदक एवं रूपये 11000/– एवं तृतीय पुरस्कार स्वरूप कांस्य पदक एवं रुपये 7500/– कुमारी मृदुलिका, शिवालिक आयुर्वेद संस्थान, देहरादून को प्राप्त हुआ।

धन्वंतरि जयन्ती एवं आयुर्वेद दिवस समारोह, प्रयागराज में आयोजन सम्पन्न

आज दिनांक 23/11/2020 को विश्व आयुर्वेद परिषद, प्रयागराज द्वारा महर्षि भारद्वाज जी के जयंती के शुभ अवसर पर काटजू की बगिया में एक समारोह का आयोजन करोना प्रोटोकाल को ध्यान में रखते हुए किया गया। इस अवसर पर हेमंत ऋतु में होने वाले सामान्य रोग एवम् उनका आयुर्वेदिक उपचार विषय पर मुख्य अतिथि डॉक्टर पी एस पांडेय जी का व्याख्यान हुआ। अध्यक्षता करते हुए डॉक्टर एस.एस. उपाध्याय ने महर्षि भारद्वाज के गुण का वर्णन करते हुए सभी चिकित्सकों से आगे बढ़कर रोगियों की चिकित्सा करने का आह्वान किया। सभा में डॉक्टर शंकर मिश्रा, डॉक्टर एस. सी. दूबे, डॉक्टर जे. नाथ मिसेज ममता मिश्रा ने भी अपने–अपने बिचार व्यक्त किए। सभा का संचालन सचिव डॉक्टर मिथिलेश धर दूबे ने किया। सभा में संघ नगर कार्यवाह बी एस द्विवेदी की भी उपस्थिति रही।

काशी में धन्वन्तरि कूप पर गुँजी वेद ऋचाएँ

राष्ट्रीय स्वास्थ्य दिवस पर आयुर्वेद की वैज्ञानिक संगोष्ठी धन्वन्तरि जयन्ती 2020 एवं राष्ट्रीय स्वास्थ्य दिवस की पूर्व संध्या पर दिनांक 11 नवम्बर 2020 को महामृत्युन्जय मन्दिर परिसर (दारानगर) स्थित धन्वन्तरि अमृत कूप एवं धनवन्त्रेश्वर महादेव पर राष्ट्र के सुखद स्वास्थ्य के निमित्त विभिन्न चिकित्सा संगठनों ने वैदिक ऋचाओं के साथ भगवान धन्वन्तरि का पूजन अर्चन एवं हवन किया गया। यजमान डा0 हरिओम पाण्डेय, डा0 सुभाष श्रीवास्तव एवं डा0 यू0 एस0 भगत थे। हवन यज्ञ में आयुष संगठन की ओर से डा0 एस0 के0 श्रीवास्तव, डा० लालजी गुप्ता, डा० दिनेश सिंह एवं वैद्य सभा की ओर से वैद्य वेद कुमार शर्मा , डा0 के0 पी0 प्रकाश, डा० एस0 एस0 गांगुली, प्राकृतिक चिकित्सा से डा0 एस0 डी0 यादव, डा0 आर0 जे0 पाल, डा0 राजेश मौर्या, डा0 सबलू यादव तथा विश्व आयुर्वेद परिषद से वैद्य के0 के0 द्विवेदी, वैद्य विजय कुमार राय, वैद्य मनीष मिश्र एवं वैद्य उमेश दत्त पाठक तथा आरोग्य भारती (काशी प्रान्त) से डा0 सुनील जी, डा० विपुल जी, डा0 इन्द्रनील बसु ने हवन कुण्ड में अपनी–अपनी श्रद्धा की आहुतियाँ डाली। काशी एवं राष्ट्र के श्री स्वास्थ्य के निमित्त पूजन–अर्चन के पश्चात् उक्त स्थान पर आयुर्वेद की वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अतिथियों का स्वागत कार्यक्रम संयोजक आयुर्वेदाचार्य डा0 सुभाष श्रीवास्तव ने किया और कहा कि आज आयुर्वेद तेजी से करोना काल में भी अपनी कार्य क्षमता के कारण विश्व व्यापी हो रहा है। अतः वैद्य समाज को पूरी निष्ठा से इसके उत्थान में समर्पित होना होगा। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में आयुष लक्षद्वीप के पूर्व निदेशक डा0 शिवशंकर मिश्रा ने कहा कि यह धन्वन्तरि कूप दुनिया का अकेला है। इसी कूप में भगवान धनवन्तरि ने स्वर्ग गमन से पूर्व अपनी औषधि पेटिका डाली थी और जल को सर्वरोग हर बनाया था । अतः यह स्थान आयुर्वेद जगत को सदियों को ऊर्जा एवं प्रेरणा देता रहा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता वैद्य सभा के संरक्षक वैद्य कुशल नाथ शर्मा ने किया। संचालन वैद्य ध्रुव कुमार अग्रहरि, विषय संयोजन डा0 नन्द किशोर सिंह एवं धन्यवाद प्रकाश डा0 विरेन्द्र सिंह ने किया।

धन्वंतरि जयन्ती एवं आयुर्वेद दिवस समारोह का आयोजन सम्पन्न

राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस एपेक्स इंस्टिट्यूट ऑफ आयुएवेदिक मेडिसिन एंड हॉस्पिटल, चुनार, मीरजापुर में धन्वन्तरि जयंती के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस मनाया गया। इस अवसर पर एपेक्स के चेयरमैन डॉ एसके सिंह, डीन प्रो सुनील मिस्त्री प्रधानाचार्य यशवंत चौहान, विभागाध्यक्ष डॉ0 ए.के. सोनकर की उपस्थिति में मुख्य अतिथि प्रो. के. के. द्विवेदी सदस्य बोर्ड ऑफ गवर्नर सीसीआईएम, डॉ0 विजय राय, महा सचिव विश्व आयुर्वेद परिषद् एवं प्रो राजीव शुक्ला, काशी अध्यक्ष विश्व आयुर्वेद परिषद् द्वारा कॉलेज प्रांगण में भगवान् धन्वन्तरि की मूर्ति का अनावरण किया गया इसी क्रम में आयोजित कोविड प्रबन्धन में आयुर्वेद के योगदान विषय पर एक सगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता प्रो के के द्विवेदी, डॉ0 विजय कुमार राय एवं डॉ0 राजीव शुक्ला ने अपने व्याख्यान में 5000 वर्ष पुरानी आयुर्वेद विधा के महत्व को बताते हुए कोविड प्रबन्धन एवं बचाव में प्रयुक्त होने वाली औषधियों एवं आयुर्वेद विधा की अत्यंत महत्वपूर्ण नियमित दैनिकचर्या द्वारा स्वास्थ्य लाभ पर प्रकाश डालते हुए आयुर्वेद के विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्ध अवसरों के विषय में छात्रों को अवगत कराया। कॉलेज के क्रियाशारीर के विभागाध्यक्ष प्रो ए. के. सोनकर द्वारा आयुर्वेद के शैक्षिक पहलू की व्याख्या की गई। चेयरमैन डॉ एस. के. सिंह द्वारा मंचासीन अतिथियों को स्मृति चिन्ह एवं शाल भेंट कर आभार प्रकट किया। कॉलेज के प्रधानाचार्य प्रो. यशवंत चौहान ने धन्यवाद ज्ञापन देते हुए कार्यक्रम का समापन किया। इस अवसर पर एपेक्स इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के आयुर्वेद एवं फार्मेसी कॉलेज के छात्र छात्राओं सहित प्रो अमित सिंह, प्रो. सुभाष गुप्ता, प्रो. वीरेंदर कुमार, प्रो. वंदना विद्यार्थी डॉ. आभा, डॉ आशीष, डॉ रणविजय, डॉ रोमेश, डॉ विनीता, डॉ रजनीश पाठक, डॉ. आशीष चंद, डॉ अरविन्द गौतम, डॉ सिद्धार्थ, डॉ. वीना, डॉ. रफीक सहित हॉस्पिटल स्टाफ उपस्थित रहे। धन्वन्तरि जयंती एवं राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस के कार्यक्रम का सम्पूर्ण संयोजन एवं संचालन ट्रस्ट इंस्टिट्यूट के डीन प्रो सुनील मिस्त्री द्वारा किया गया।